RNI : RAJHIN13216/2005

दैनिक
गरीबों का सितारा
।। दशकों पुराना साथ।।
निष्पक्ष कलम निर्भीक आवाज
"आमजन का अखबार" "जन-जन के विचार"
।। अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ।।
हमारा ध्येय : निष्पक्ष, निरंतर, निर्भय

श्री हनुमान प्राकट्योत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष: 17 | अंक: 254 | पेज: 8 | मूल्य 01 रु. | जयपुर, गुरुवार 6 अप्रैल, 2023 | Email: garibonkasitara@gmail.com

खून के कतरे-कतरे में 'हाथ', ना सीएम गहलोत, ना पायलट सिर्फ 'हाईकमान'

गरीब और किसान के लिए अपने दिल में खास जगह और सम्मान रखते और पार्टी की गुटबाजी से खुद को दूर रखते है 'मंत्री चांदना'

गरीबों का सितारा

राजनीतिक संवाददाता, जयपुर। भले ही प्रदेश कांग्रेस में गहलोत-पायलट की लड़ाई मीडिया की सुर्खियों में हो और इन दोनों बड़े नेताओं के ग्रुप सक्रिय हो लेकिन राजस्थान कांग्रेस में और गहलोत मंत्रिमंडल में शामिल एक ऐसा नेता भी है जो पार्टी के किसी भी ग्रुप से जुड़ा हुआ नहीं दिखता बल्कि वह कांग्रेस पार्टी के सिंबल "हाथ" को ही को ही अपनी "माई -बाप" मानता है और खुद को पार्टी हाईकमान के ग्रुप से ही जुड़ा होना बताता है, जी हां मैं बात कर रहा हूं स्पोर्ट्स मिनिस्टर अशोक चांदना की जिन पर कभी पायलट का टैग लगा दिया जाता है तो कभी गहलोत का लेकिन सितारा न्यूज नेटवर्क दैनिक समाचार पत्र गरीबों का सितारा टीम के संवाददाताओं की एक टीम ने करीब 4 दिन तक हिंडोली विधानसभा क्षेत्र में घूम फिर कर लोगों से बातचीत की और चांदना के बेहद निकट के लोगों से भी बातचीत की तो बातचीत का जो पूरा निचोड़ निकलकर सामने आया उसमें एक ही बात प्रमुखता से उजागर हुई कि वे गरीब और किसान के लिए अपने दिल में खास जगह और सम्मान रखते हैं और पार्टी की गुटबाजी से खुद को दूर रखते हुए मनमौजी स्वभाव से अपने मंत्रालय का पूरे दिलो दिमाग से काम संभालने में ज्यादा रुचि रखते हैं। भले ही लोग उनके बारे में अच्छा सोचे या बुरा इससे उन्हें कोई मतलब नहीं उन्हें सिर्फ मतलब है तो अपने निर्वाचन क्षेत्र की जनता की पीड़ा को दूर करने से और प्रदेश के खेल मंत्रालय को बुलंदियों तक ले जाने से ' जिसके अच्छे अप्रत्याशित परिणाम भी सामने आए हैं। आज प्रदेश में खेल और खिलाड़ियों दोनों के स्तर में अप्रत्याशित तरीके से इजाफा हुआ है और प्रदेश में पहली बार खेलों में उत्सव जैसा माहौल देखने को मिल रहा है।

सितारा न्यूज नेटवर्क
पालिटिक्स
बिग स्टोरी
गरीबों का सितारा
सितारा न्यूज नेटवर्क

आमजन के प्रति कोमल ह्रदय रखने वाले चांदना जैसे नेताओं की है जरूरत

बूंदी जिले के हिंडोली विधानसभा क्षेत्र से चांदना लगातार दूसरी बार विधायक चुने गए ' वर्तमान में पोलो के शानदार खिलाड़ी है ही इससे पहले क्रिकेट के भी अच्छे खिलाड़ी रह चुके हैं वर्तमान में स्पोर्ट्स मिनिस्टर के तौर पर उनका कार्यकाल बेमिसाल रहा है लेकिन चांदना आमजन के प्रति बहुत ही कोमल ह्रदय भी रखते हैं जिसकी बानगी कुछ माह पहले उस समय देखने को मिली जब राज्यसभा सांसद डॉक्टर किरोड़ी लाल मीणा के साथ दोसा जिले के एक पीड़ित परिवार की महिलाएं अपनी समस्या को लेकर मुख्य सचिव उषा शर्मा के पास पहुंची और वहां पर शर्मा की केबिन में पीड़ित परिवार की महिलाएं जब फर्श पर बैठी हुई थी तो चांदना ने फर्श पर बैठी महिलाओं के फोटो सहित ट्वीट किया था कि "अब यह सूरत बदलनी चाहिए"चांदना अपने ट्वीट के माध्यम से कहना चाहते थे कि चाहे सरकार हो या अफसर जनता के नौकर होते हैं इसलिए आम जन को सरकारी दफ्तरों में सम्मान मिलना चाहिए फर्श पर पीड़ित लोगों को बिठाना शोभा नहीं देता। इस ट्वीट ने अशोक चांदना के कोमल ह्रदय को उजागर किया है जो आजकल बहुत कम राजनेताओं में और अफसरों में देखने को मिलता है।

हमारे खास संवाददाताओं की टीम का हिंडोली, बूंदी दौरा जनता से रूबरू

अगर गहलोत के खास होते तो फिर मुख्यमंत्री को मंत्री पद छोड़ने की धमकी क्यों देते ?

जानकार लोगों का कहना है कि चांदना इन दिनों गहलोत के काफी करीब आ गए हैं लेकिन अगर ऐसा होता तो फिर कुछ माह पहले चांदना को मुख्यमंत्री के सचिव कुलदीप राका की कार्यशैली से नाराज होकर मंत्री पद छोड़ने संबंधी ट्वीट क्यों करना पड़ा ? अगर गहलोत के खास होते तो क्या फिर कुलदीप राका चांदना की खिलाफत करने जैसे निर्णय लेने की हिम्मत जुटा पाते ? जानकार लोगों का कहना है कि अगर गहलोत के खास होते तो फिर चांदना के सामने इस तरह की स्थितियां ही नहीं बनती कि उन्हें मंत्री पद छोड़ने के लिए विवश होना पड़ जाता ' जानकार लोगों का कहना है कि अगर चांदना गहलोत के खास होते तो फिर वे कभी भी खुलकर नौकरशाही की कार्यशैली पर सवाल खड़े करके अपने ही सरकार को कटघरे में खड़ा नहीं करते। यही वजह है कि चांदना के निकट के लोग साफ कहते हैं कि चांदना राजनीति में किसी व्यक्ति विशेष की पूजा करने के बजाए अपने कर्म में और पार्टी के प्रति निष्ठा भाव रखने में ज्यादा विश्वास रखते हैं, यही गुण चांदना की ताकत जिसके बूते पर वे खुलकर नौकरशाही के खिलाफ भी बोलते हैं और अपने विरोधियों की भी जुबान बंद कर देते हैं।

प्रदेश के गुर्जर बिरादरी के एक वर्ग में चांदना से नाराजगी किसी भी मायने में ठीक नहीं

हिंडोली निर्वाचन क्षेत्र की जनता और गुर्जर बिरादरी के एक बड़े वर्ग का कहना है कि गुर्जर बिरादरी का एक तबका बेवजह चांदना से नाराज है ' गुर्जर बिरादरी के एक वर्ग का कहना है कि चांदना ने पायलट के साथ धोखा किया, इस आरोप के बारे में हिंडोली के लोगों का कहना है कि अगर कोई अपनी ही पार्टी की सरकार को बचाने में सहयोग करता है तो क्या वह गलत है ? चांदना कांग्रेस पार्टी के सिंबल से चुनाव जीते थे और राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की ही सरकार थी इसलिए जिस पार्टी के सिंबल से वे चुनाव लड़कर जीते तो फिर वह कैसे उस पार्टी की सरकार के खिलाफ जाते, यह बात तो एक साधारण सी बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी समझ सकता है लेकिन चांदना की कांग्रेस पार्टी के प्रति निष्ठा की भावना रखने की प्रवृत्ति पर ही गुर्जर समुदाय के एक ग्रुप के लोगों ने सवाल खड़े कर दिए जो ठीक नहीं है।

मीडिया ने गहलोत-पायलट के टैग लगा दिए जबकि हकीकत है कुछ और...

चांदना के निकट के लोगों और हिंडोली क्षेत्र के लोगों का कहना है कि यह मीडिया के दिमाग की उपज की देन है कि चांदना को कभी अशोक गहलोत का खास बना दिया तो कभी सचिन पायलट का लेकिन हकीकत यह है कि चांदना खुद को कांग्रेस पार्टी का सच्चा सिपाही मानते हैं और पार्टी हाईकमान उन्हें जो भी जिम्मेवारी देता है उसका इमानदारी और कर्मठता से निर्वहन करते हैं जब सचिन पायलट के हाथों में प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की कमान थी तो उस समय चांदना के हाथों में युवक कांग्रेस की कमान सौंपी गई थी जिसका मीडिया ने यह अर्थ निकाल लिया कि चांदना पायलट ग्रुप के हैं और अब जब वे गहलोत सरकार के मंत्रिमंडल में शामिल हैं तो उन्हें अशोक गहलोत का खास बताया जा रहा है जबकि चांदना कि हमेशा यही सोच रहती है कि उन्हें जो भी जिम्मेवारी मिलती है चाहे वह संगठन में हो या फिर सत्ता में वह जिम्मेवारी सिर्फ और सिर्फ पार्टी हाईकमान की ओर से ही उन्हें दी गई है इसलिए वे हमेशा से खुद को पार्टी हाईकमान के ग्रुप से जुड़ा होना ही बताते हैं चाहे मीडिया उन पर किसी नेता का टैग लगा दे इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। चांदना सिर्फ "सत्य" में विश्वास रखते हैं और "सत्य" यही है कि कांग्रेस पार्टी का सिंबल "हाथ" ही उनकी जान है।

सोनिया के घर शिफ्ट होंगे राहुल, सामान भेजा जा रहा

राहुल ने कहा था- इस सरकारी बंगले से अच्छी यादें जुड़ीं

गरीबों का सितारा

नई दिल्ली। राहुल गांधी सरकारी बंगला छोड़ने के बाद सोनिया गांधी के घर (10 जनपथ) शिफ्ट हो रहे हैं। उनका सामान शिफ्ट किया जा रहा है। वे जल्द ही यहां रहने लगेंगे। 23 मार्च को सूरत कोर्ट ने मानहानि केस में उन्हें 2 साल कैद की सजा सुनाई थी। हालांकि कुछ ही देर में उन्हें जमानत भी दे दी थी। इसके अगले दिन राहुल की लोकसभा सदस्यता रद्द कर दी गई। जिसके बाद 27 मार्च को उन्हें बंगला खाली करने का नोटिस दिया गया। नोटिस मिलने के बाद राहुल ने कहा था कि सरकारी बंगले से उनकी कई अच्छी यादें जुड़ी हुई हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने तब उन्हें अपने या सोनिया के बंगले में शिफ्ट होने का सुझाव दिया था।

अमेठी से सांसद बनने के बाद 2005 में सरकारी बंगला दिया गया था

राहुल को 27 मार्च को लोकसभा हाउसिंग कमेटी ने 12 तुगलक रोड का सरकारी आवास खाली करने का नोटिस भेजा था। बंगला खाली करने के लिए 24 अप्रैल तक का समय दिया गया था। नोटिस मिलने के अगले दिन राहुल ने लोकसभा सचिवालय के डिप्टी सेक्रेटरी डॉ. मोहित रंजन को लिखित जवाब भेजा। राहुल ने अपने जवाब में लिखा- मैं 4 बार लोकसभा सांसद चुना गया। यह लोगों का जनादेश है, जिसके लिए मैं लोगों का शुक्रगुजार हूं। मेरी इस घर से कई अच्छी यादें जुड़ी हुई हैं। मैं नोटिस में दिए गए आदेश का पालन करूंगा। 2004 में अमेठी से पहली बार सांसद चुने जाने पर राहुल को यह बंगला 2005 में अलॉट किया गया था।

6 महीने बाद कोरोना के 4 हजार से ज्यादा केस:24 घंटे में 4435 नए मरीज,15 मौतें

दिल्ली में 509 नए केस, पॉजिटिविटी रेट 26.54 फीसदी

गरीबों का सितारा

नई दिल्ली। देश में 6 महीने बाद कोरोना के नए मामले 4 हजार से ज्यादा आए हैं। मंगलवार को देश में 4,435 मामले मिले, जबकि 15 लोगों की मौत हुई। इससे पहले 28 सितंबर को 4,271 मामले सामने आए थे। इस दौरान 2,508 लोग इस बीमारी से ठीक हुए। फिलहाल देश में 23,091 एक्टिव केस हैं। ये 18 अक्टूबर के बाद सबसे ज्यादा हैं। तब 23,376 लोगों का इलाज चल रहा था। बीते 24 घंटों में कोरोना से हुई 15 मौतों में 4 सिर्फ महाराष्ट्र में हुई हैं, जबकि राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक और पुडुचेरी में एक-एक व्यक्ति की मौत हुई। इनके अलावा केरल से 4 लोगों की मौत रजिस्टर की गई है, लेकिन यह बैकडेट में है। यानी ये मौतें पहले कभी हुई हैं, जिन्हें आज दर्ज किया गया है। इधर, दिल्ली में बुधवार को 509 नए मरीज मिले। 424 लोग इस बीमारी से ठीक हुए।एक्टिव केस 1795 हो गए हैं। यहां पॉजिटिविटी रेट 26.54% हो गया है।

कोविड मैनेजमेंट को लेकर इंपावर्ड ग्रुप वन की मीटिंग

देश में बढ़ते कोरोना मामलों के बीच बुधवार को गवर्नमेंट इंपावर्ड ग्रुप वन की मीटिंग हुई। इस मीटिंग में कोविड मैनेजमेंट को लेकर चर्चा की गई। अध्यक्षता डॉ. वीके पॉल ने की। सरकार ने मई 2020 में कोरोना वायरस से निपटने के लिए 6 इंपावर्ड ग्रुप बनाए थे। इनमें सरकार के 50 से ज्यादा सीनियर अधिकारी शामिल थे। मई 2021 में इन ग्रुप्स की संख्या बढ़ाकर 10 कर दी गई थी। देश में 15 नवंबर के बाद से कोरोना के मामलों में लगातार कमी आ रही थी। डेली केस 500 से कम होते हुए 30 जनवरी को सबसे कम 64 पर पहुंचे। फरवरी के अंत तक यही ट्रेंड जारी रहा जिसमें डेली केस 200 से 300 के बीच रहे। लेकिन, मार्च आते ही मामलों में अचानक तेजी आने लगी। 11 मार्च को 500 से ज्यादा मामले आए, 21 मार्च को मामले बढ़कर 1,100 से ज्यादा हो गए। 28 मार्च को 2 हजार से ज्यादा और 29 मार्च को 3 हजार से ज्यादा केस मिले।

सुप्रीम कोर्ट में 14 विपक्षी दलों की याचिका खारिज

CBI-ED के मनमाने इस्तेमाल का आरोप था CJI बोले- अलग गाइडलाइन नहीं बना सकते

गरीबों का सितारा

नई दिल्ली। CBI और ED जैसी केंद्रीय एजेंसियों के मनमाने इस्तेमाल को लेकर 14 विपक्षी दलों की याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी है। CJI डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने बुधवार को कहा कि राजनेताओं के लिए अलग से गाइडलाइन नहीं बनाई जा सकती। विपक्षी दलों ने कोर्ट की इस टिप्पणी के बाद अपनी याचिका वापस ले ली। CJI ने यह भी कहा कि जब आप ये कहते हैं विपक्ष का महत्व कम हो रहा है तो इसका इलाज राजनीति में ही है, कोर्ट में नहीं। उखक ने यह भी कहा कि कोर्ट के लिए तथ्यों के अभाव में सामान्य गाइडलाइन जारी करना खतरनाक होगा। बता दें कि कांग्रेस के नेतृत्व में 14 विपक्षी दलों ने केंद्र सरकार पर उइक और एऊ के मनमाने इस्तेमाल का आरोप लगाया था। याचिका में इन दलों ने गिरफ्तारी, रिमांड और जमानत को लेकर नई गाइडलाइन जारी करने की मांग की थी।

अभिषेक मनु सिंघवी

विपक्षी दलों की तरफ से सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने दलील पेश की। सिंघवी ने कहा- साल 2013-14 से लेकर 2021-22 तक उइक और एऊ के मामलों में 600% की वृद्धि हुई है। एऊ ने 121 नेताओं की जांच की, जिनमें से 95% विपक्षी दलों से हैं। वहीं उइक ने 124 नेताओं की जांच की, जिसमें से 95% से अधिक विपक्षी दलों से हैं।

जस्टिस चंद्रचूड़

इस पर सुप्रीम कोर्ट ने सिंघवी से पूछा, क्या हम इन आंकड़ों की वजह से कह सकते हैं कि कोई जांच या मुकदमा नहीं होना चाहिए? क्या यह बचाव का कारण हो सकता है? कोर्ट ने कहा कि एक राजनीतिक दल का नेता मूल रूप से एक नागरिक होता है और नागरिकों के रूप में हम सभी एक ही कानून के अधीन हैं। जस्टिस चंद्रचूड़ ने याचिका की वैधता और व्यावहारिकता पर संदेह व्यक्त किया। उन्होंने सिंघवी से पूछा कि क्या वह जांच और केस से विपक्षी दलों के लिए सुरक्षा की मांग कर रहे हैं? क्या उनके पास नागरिक के रूप में कोई विशेष अधिकार है?

अभिषेक मनु सिंघवी

सिंघवी ने स्पष्ट किया कि वह विपक्षी नेताओं के लिए कोई सुरक्षा या छूट नहीं मांग रहे, बल्कि केवल कानून की निष्पक्षता चाहते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार विपक्ष को कमजोर और डराने के लिए एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है और यह लोकतंत्र और कानून के शासन के लिए नुकसानदेह है।

PM से बोले पद्मश्री कादरी- मुझे गलत साबित कर दिया

कहा-भाजपा की सरकार बनी तो लगा अब मुझे इस सम्मान लायक न समझा जाए

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन में बुधवार को 53 हस्तियों को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पद्म पुरस्कारों से नवाजा गया। इनमें उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मुलायम सिंह यादव, मेडिकल प्रोफेशनल दिलीप महालनाबिस, ऑथर सुधा मूर्ती, रिसर्चर दीपक धर, नोवेलिस्ट एस एल भैरप्पा, वैदिक विद्वान त्रिदंडी चिन्ना जीयर स्वामी, ऑस्कर विनर नाटू-नाटू गाने के म्यूजिक डायरेक्टर एमएम कीरावानी, फिल्म एक्ट्रेस रवीना टंडन आदि शामिल हैं। पद्म पुरस्कार समारोह में पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शाह रशीद अहमद कादरी ने कहा- कांग्रेस शासन के दौरान, मुझे पद्मश्री नहीं मिला। मैंने सोचा था कि भाजपा सरकार मुझे यह सम्मान नहीं देगी, लेकिन आपने मुझे गलत साबित कर दिया। पद्मश्री से सम्मानित कादरी बिदरी कला के शिल्पकार हैं। वे पचास साल से भी ज्यादा समय से इस कला में काम कर रहे हैं। उन्होंने कई डिजाइन और पैटर्न इजाद करके बिदरी शिल्प को विकसित किया। ग्रुप फोटो में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज राष्ट्रपति भवन में पद्म पुरस्कारों से सम्मानित हस्तियों का साथ।

पूर्वानुमान>	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
अधिकतम>	27°c	29°c	30°c	30°c
न्यूनतम>	16°c	19°c	19°c	19°c

20°

विशिष्ट पर्वत-प्रशिक्षित बल आईटीबीपी ने जीती प्रतियोगिता

13वीं अखिल भारतीय पुलिस कमांडो प्रतियोगिता में आईटीबीपी के कमांडो सुभाष मील ने सीकर जिले का किया नाम रोशन

गरीबों का सितारा

जयपुर (विनोद धायल)। 13वीं अखिल भारतीय पुलिस कमांडो प्रतियोगिता में शीर्ष पर रही आईटीबीपी, एनएसजी समेत 24 टीमों ने लिया था हिस्सा। विशिष्ट पर्वत-प्रशिक्षित बल आईटीबीपी ने पहली बार यह प्रतियोगिता जीती है। शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले के दांतारामगढ़ तहसील के पचार गांव में रहने वाले मील परिवार के बेटा सुभाष मिल वर्तमान में आइटीबीपी सेना में कमांडो के पद पर कार्यरत है। 80 के दशक में जटिल सुरक्षा चुनौतियों में आईटीबीपी के जांबाजों ने 1982 के एशियाई खेलों की सुरक्षा के लिए कमांडो प्रदान किए थे। उसके बाद 1983 में राष्ट्रमंडल सेनाध्यक्षों की बैठक (सीएचओजीएम) और नई दिल्ली में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) 1983 की जो बैठक हुई थी, उसमें भी बल के

कमांडो ने अचूक सुरक्षा प्रदान की थी। अब इसी बल ने राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय पुलिस कमांडो प्रतियोगिता (एआईपीसीसी) 2023 का 13वां संस्करण जीत लिया है। इस प्रतियोगिता में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों और राज्य पुलिस बलों की 24 शीर्ष कमांडों टीमों ने भाग लिया था। विशिष्ट पर्वत-प्रशिक्षित बल आईटीबीपी ने पहली बार यह प्रतियोगिता जीती है। 11 दिवसीय इस प्रतियोगिता का उद्घाटन 21 मार्च को हुआ था, जबकि 31 मार्च को इसका समापन समारोह मानेसर में हुआ है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता देश के पुलिस बलों के बीच सबसे कठिन पेशेवर प्रतियोगिताओं में से एक है। प्रतियोगिता ट्रॉफी के अलावा, आईटीबीपी टीम ने फायरिंग में सर्वश्रेष्ठ और रणनीति में सर्वश्रेष्ठ ट्रॉफी भी जीती ।वर्ष 2009 में शुरू हुई अखिल भारतीय पुलिस कमांडो प्रतियोगिता का पहला संस्करण मध्यप्रदेश के टेकनपुर में आयोजित किया गया था। इस प्रतियोगिता को देश के पुलिस 'बलों के बीच शीर्ष पेशेवर प्रतियोगिता माना जाता है। 1962 के बाद से सबसे कठिन जलवायु और इलाके की परिस्थितियों में भारत-चीन सीमाओं की रक्षा करने के अलावा, आईटीबीपी का देश में बेहतरीन कमांडो तैयार करने का एक विशिष्ट इतिहास रहा है। इसी वजह से 80 के दशक में जब जटिल सुरक्षा चुनौतियों रही थीं, तब एशियाई खेलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी आईटीबीपी कमांडो ने संभाली थी। इसके बाद 1983 में राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक (सीएचओजीएम) और नई दिल्ली में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) 1983 की बैठक के दौरान भी बल के कमांडो ने सुरक्षा प्रदान की थी।

पंचाग

गरीबों का सितारा — निर्भीक कलम, निष्पक्ष आवाज

दिनांक 06अप्रैल 2023 गुरुवार
विक्रम संवत2080चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि	पूर्णिमा	10:03:36
पक्ष	शुक्ल	
नक्षत्र	हस्त	12:40:40
योग	व्याघात	26:29:52
करण	बव	10:03:36
करण	बालव	22:15:27
चन्द्र राशि	कन्या	25:09:47
चन्द्र राशि	तुला	25:09:47
सूर्य राशि	मीन	
दिशा शूल	दक्षिण	
सूर्योदय(जयपुर)		06:14:00
सूर्यास्त	18:45:01	
चंद्रोदय	19:01:56	
चंद्रास्त	06:40:51	
राहू काल	14:03-15:37	
अभिजित	12:04-12:55	
शुभ चोघडिया		
शुभ	06:14-07:48	शुभ
चर	10:56-12:30	शुभ
लाभ	12:30-14:03	शुभ
अमृत	14:03-15:37	शुभ
शुभ	17:11-18:45	शुभ

श्री हनुमान जन्मोत्सवः-आज

ज्योतिषाचार्य
भानुप्रकाश शास्त्री

श्री बजरंग धोरा धाम में हनुमान जन्मोत्सव पर भरेगा भव्य मेला

अभिषेक विशेष श्रंगार महाआरती छप्पनभोग

श्री बजरंग धोरा धाम में हनुमान जन्मोत्सव पर भरेगा भव्य मेला

गरीबों का सितारा

गरीबों का सितारा/उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। श्री बजरंग धोरा धाम में गुरुवार दिनांक 6 अप्रैल 2023 को हनुमान जन्मोत्सव का भव्य मेला भरेगा। बजरंग धोरा मंदिर के प्रधान पुजारी मनमोहन दाधीच ने बताया कि जन्मोत्सव पर दोपहर 12 बजे महाआरती होने के बाद बाबा को बूंदी के प्रसाद का भोग लगा कर भक्तों में वितरण किया जाएगा। श्री बजरंग धोरा विकास समिति के आशीष दाधीच ने बताया कि इस अवसर पर पंडित ब्रजमोहन दाधीच द्वारा हनुमान प्रतिमा का अभिषेक कर विशेष श्रंगार किया गया है और भव्य दरबार सजाया गया है। साथ ही मंदिर परिसर में ध्वज पताका लगाकर लाइटों से मंदिर की सजावट की गई है। समिति के सचिव आशीष दाधीच ने बताया कि मेले में बाबा के छप्पन भोग का प्रसाद चढ़ाया जाएगा तथा साय आरती 7:45 बजे की जाएगी। मेले में लक्ष्मण पारीक एंड पार्टी द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी। अनुज दाधीच ने बताया कि मेले पर भक्तों की सुविधा हेतु कार्यकर्ताओ की टीम तैनात रहेगी तथा दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु मंदिर व प्रशासन द्वारा व्यवस्था को सुचारू करने के लिए कार्यकर्ता व पुलिसकर्मी मौजूद रहेंगे।

खाटू में प्लास्टिक वेस्ट की समस्या का निदान करने के लिए लागू होगा डिजिटल डिपॉजिट सिस्टम

गरीबों का सितारा

सीकर। खाटूश्यामजी मंदिर में श्याम भक्तों के सुगम दर्शन और प्रशासनिक व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के संबंध में जिला कलेक्टर डॉ. अमित यादव की अध्यक्षता में बुधवार को समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिला कलेक्टर डॉ. यादव ने अधिशाषी अधिकारी खाटू नगरपालिका को निर्देशित किया कि मंदिर परिसर के आस पास साफ-सफाई की अच्छी व्यवस्था करने के लिए डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण के लिए जल्द से जल्द टेंडर जारी कर कचरा संग्रहण करवाना सुनिश्चित करें तथा इस कार्य में किसी तरह की लापरवाही न बरती जाए, साथ ही नगरपालिका क्षेत्र में जगह चिन्हित कर इंदिरा रसोइयों का संचालन करना सुनिश्चित करें तथा जिला प्रशासन की पहल पर इस बार श्याम भक्तों की चरण पादुकाओं के जोड़े बनाने की पहल को आगे बढ़ाते हुए मंदिर कमेटी के साथ समन्वय रखें तथा इस कार्य को निरंतर जारी रखें। उन्होंने रींगस से खाटूश्यामजी तक के पैदल मार्ग पर आने वाली सभी धर्मशालाओं में अतिरिक्त शौचालयों का निर्माण करने के लिए निर्देशित करें। जिला कलेक्टर डॉ. यादव ने जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि खाटूश्यामजी के लिए की गई बजट घोषणाओं के संबंध में आवश्यक कार्यवाही कर प्रगति दर्ज करें तथा मंदिर तक जाने वाले विभिन्न मार्गो पर अधूरे चल रहे सड़क निर्माण, लाईट शिफ्टिंग और पॉर्किंग से संबंधित कार्यो को तय समय पर पूर्ण कर पालना रिपोर्ट भिजवायें। मंदिर कमेटी श्रृदालुओं को पानी वितरण के लिए प्लास्टिक पाउच का इस्तेमाल नहीं करें। जिला कलेक्टर डॉ. अमित यादव की पहल पर खाटूश्यामजी मंदिर परिसर और पैदल मार्ग पर प्लास्टिक वेस्ट की समस्या से निपटने के लिए जिला प्रशासन द्वारा किए जाने वाले नवाचार के संबंध में चर्चा की गई जिसके तहत डिजिटल डिपॉजिट सिस्टम का संचालन करने वाली रिसाइकल सस्टेनेबल सकुर्लेरिटी कम्पनी के प्रतिनिधियों ने बताया कि डिजिटिल डिपॉजिट रिफन्ड सिस्टम के तहत प्लास्टिक की बोतल, चिप्स के पैकेट आदि पर एक क्यूआर कोड लगाया जाता है। इस सिस्टम के तहत प्रोडक्ट की एमआरपी से ज्यादा रेट कस्टमर से ली जाती है। प्रोडक्ट को यूज करने के बाद जब बोतल, पैकेट जब वें वेस्ट हो जाते हैं तो वह कंपनी के स्टॉक सेंटर पर जमा करवाता है, तो क्यूआर कोड को स्कैन करने पर कस्टमर को एमआरपी से ज्यादा वसूली की गई राशि उसके अकाउंट में क्रेडिट हो जाती है। कम्पनी इस तरह के प्रोजेक्ट केदारनाथ, उड़ीसा में प्रयोग कर चुकी है। बैठक में सीकर एसपी करण शर्मा, एडीएम राकेश कुमार, दांतारामगढ़ एसडीएम प्रतिभा वर्मा, खाटूश्याम मंदिर कमेटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह चौहान, मंदिर कमेटी मैनेजर संतोष शर्मा सहित और अन्य प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय पक्षी मोर के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किये जाएं हर संभव प्रयास : जिला कलक्टर

गरीबों का सितारा

जयपुर। राष्ट्रीय पक्षी मोर संरक्षित पक्षियों में शुमार है, इसलिए जयपुर जिले में मोर का संरक्षण एवं संवर्धन के लिए हर संभव प्रयास किये जाएं। शिकारियों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जाए साथ ही, मोर बाहुल्य क्षेत्रों में जनजागरूकता अभियान शुरू किया जाए ताकि मोर को सुरक्षित वातावरण मिले साथ ही मोर की संख्या में इजाफा हो। यह कहना है जिला कलक्टर प्रकाश राजपुरोहित का। बुधवार को कलक्ट्रेट सभागार में जिला मोर संरक्षण समिति, जिला पर्यावरण समिति, जिला पारिस्थितिकी पर्यटन समिति एवं सांभर लेक सतर्कता समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में कलक्टर ने जिला मोर संरक्षण समिति के हस्ताक्षर अभियान का भी आगाज किया। बैठक को संबोधित करते हुए कलक्टर ने कहा कि जयपुर शहर में हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा निर्धारित मानदंडों की पालना सुनिश्चित की जाए। साथ ही उन्होंने जिला स्तरीय टास्क फोर्स द्वारा घर-घर औषधि योजना के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा की। कलक्टर ने वन क्षेत्र के बाहर वृक्षावरण बढ़ाने के लिए स्थानीय निकायों एवं ग्रामीण विकास संस्थाओं द्वारा वितरित किये जाने वाले पौधावितरण के बेहतर क्रियान्वयन के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रथम) दिनेश कुमार शर्मा, उप वन संरक्षकर कपिल चन्द्रवाल, उप वन संरक्षक (जयपुर, उत्तर, मनफूल विश्नोई सहित वन विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सैनी समाज की बैठक आयोजित, 11 अप्रैल को मनाएंगे महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती

16अप्रैल को होगा विशाल रक्तदान शिविर

लोसल, (विनोद धायल)। यहां सैनी समाज की मीटिंग भोलाराम की कोठी स्थित चौक में आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता समाज के अध्यक्ष बजरंग लाल सैनी ने की ' बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों एवं समाज के लोगों ने आगामी 11 अप्रैल को महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाने पर विचार विमर्श किया, जिसमें तय किया गया कि कुचामन बाईपास स्थित ज्योतिबा फुले सर्किल पर 11 अप्रैल को प्रातः 9:15 बजे महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती समारोह पूर्वक मनाई जाएगी, इस मौके पर ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों के उपस्थित होने की अपील की गई ' मीटिंग में ज्योतिबा फुले की जयंती के उपलक्ष में फुले ब्रिगेड द्वारा 16 अप्रैल को आयोजित किए जाने वाले रक्तदान शिविर के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई और समाज के सभी लोगों से इस शिविर में अपना सहयोग कर रक्तदान करने को कहा गया ' मीडिया प्रभारी ने बताया कि रक्तदान शिविर यहां श्री हनुमान धर्मशाला में आयोजित किया जाएगा, जिसमें जयपुर, सीकर एवं डीडवाना की टीमे रक्त संग्रहण करेगी ' इससे पहले मीटिंग के शुरू में सचिव सुखदेव सैनी ने पिछली मीटिंग की कार्रवाई के बारे में सभी को अवगत करवाया, इसके पश्चात कई वक्ताओं ने समाज सुधार के बारे में अपने विचार व्यक्त भी किए ' मीटिंग में समाज के पदाधिकारियों सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे ' समाज की अगली मासिक मीटिंग 30 अप्रैल को डीडवाना रोड स्थित मालियों की ढाणी में आयोजित की जाएगी।

श्री दक्षिण मुखी बालाजी मंदिर हाथोज धाम में होगा चैत्र पूर्णिमा महोत्सव

आज श्री हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाएगा भक्ति भाव और उत्साहपूर्ण

स्वामी बालमुकुंदाचार्य महाराज के सानिध्य में होगा आयोजित

गरीबों का सितारा

जयपुर। श्री दक्षिण मुखी बालाजी मंदिर हाथोज धाम में 6 अप्रैल गुरुवार को हनुमान जन्मोत्सव स्वामी बालमुकुंदाचार्य महाराज हाथोज धाम के सानिध्य में आयोजित किया जाएगा। श्री बालाजी कल्याण सेवा ट्रस्ट के प्रवक्ता ने बताया कि चैत्र पूर्णिमा हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर क्षेत्र के विभिन्न इलाकों से पदयात्राएं प्रारंभ होकर श्री दक्षिण मुखी बालाजी मंदिर हाथोज धाम पहुंचेगी। हनुमान जन्मोत्सव के पर्व पर बालाजी महाराज की छप्पन भोग एवं फूल बंगला झांकी सजाई जाएगी। प्रातः 7:15 धूप आरती 12:15 राजभोग आरती छप्पन भोग अर्पित कर सायंकाल 7: 15 बजे संध्या आरती एवं रात्रि 12:15 बजे शयन आरती कर हनुमान जन्मोत्सव कार्यक्रम संपन्न होगा।

रमेश सिंह जोधा जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी (सिविल लाइन्स ब्लॉक के बने उपाध्यक्ष

गरीबों का सितारा

जयपुर। (विनोद धायल)। रमेश सिंह जोधा को जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी (सिविल लाइन्स ब्लॉक) का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह खाचरियावास ने की है। रमेश सिंह जोधा वर्तमान में मित्र नगर कॉलोनी विकास समिति, राम नगर, सोडाला के अध्यक्ष हैं। इस नियुक्ति पर आज उनका मित्र नगर कॉलोनी व आसपास की कॉलोनियों के निवासियों द्वारा माला पहनाकर स्वागत किया ओर उन्हें बधाई दी।

किया मुकाम हासिल : हाउसिंग बोर्ड बना देश की सबसे बड़ी रेरा रजिस्टर्ड संस्था

बना इतिहास : मंडल के 100 प्रोजक्ट रेरा में रजिस्टर्ड, मिला श्रेय : आवासन आयुक्त ने मंडल टीम को दी बधाई

गरीबों का सितारा

जयपुर। राजस्थान आवासन मंडल आयुक्त पवन अरोड़ा ने मंडल की 100वीं परियोजना के रेरा (राजस्थान रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी) में पंजीकृत होने पर मंडल टीम को बधाई देकर कार्मिकों का उत्साहवर्धन किया। मंडल को रेरा के तीन डिजिट में लाने वाली 100वीं परियोजना जोधपुर की चौपासनी में उद्यान अपार्टमेंट रही। आवासन आयुक्त ने मंडल मुख्यालय पर बुधवार को प्राप्त इस उपलब्धि के लिए शाबाशी दी और उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि मंडल द्वारा चलाए जा रही सभी परियोजना में रेरा की पालना सुनिश्चित करने के लिए शाखा का गठन किया गया गया और मंडल शत प्रतिशत रेरा की पालना कर रहा है। उन्होंने कहा कि आमजन के विश्वास को हम रेरा के साथ निरंतर मजबूत कर रहे हैं। अरोड़ा ने बताया मंडल के 100 प्रोजक्ट अब तक रेरा में पंजीकृत हो चुके हैं, जल्द ही यह आंकड़ा दिन ब दिन बढ़ता जाएगा। उन्होंने बताया कि रेरा में 100 प्रोजेक्ट पंजीकृत होने पर राजस्थान आवासन मंडल देश की सबसे बड़ी रेरा रजिस्टर्ड संस्था बन गई। उन्होंने कहा कि स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल और रेरा चेयरमैन एनसी गोयल के नेतृत्व में मंडल के सभी प्रोजेक्टों में रेरा की पालना सुनिश्चित करवाई जा रही है। आवासन आयुक्त ने बताया कि गुरूवार को मण्डल मुख्यालय पर एक लघु समारोह आयोजित किया जा रहा है, जिसमें रेरा राजस्थान के चैयरमेन एन.सी. गोयल को आवासन मण्डल की ओर से सम्मानित किया जाएगा। साथ ही आवासन मण्डल के 100 प्रोजेक्ट रजिस्टर्ड होने पर रेरा की तरफ से भी ट्रॉफी प्रदान की जाएगी और जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों का इस उपलब्धि को प्राप्त करने में सहयोग रहा है उनको भी सम्मानित किया जाएगा।

कार्य में लापरवाही बरतने पर एक सहायक अभियन्ता व दो कनिष्ठ अभियन्ता निलम्बित

जयपुर। जयपुर डिस्कॉम प्रशासन द्वारा सख्त कार्यवाही करते हुए कार्य में लापरवाही बरतने पर निगम के एक सहायक अभियन्ता व दो कनिष्ठ अभिन्ताओं को तुरन्त प्रभाव से निलम्बित कर दिया है। जयपुर डिस्कॉम के प्रबन्ध निदेशक श्री आर.एन.कुमावत ने बताया कि सहायक अभियन्ता-पवस, भिवाड़ी श्री कालू राम शर्मा एवं कनिष्ठ अभियन्ता भिवाड़ी श्री अभिषेक भारद्वाज व कनिष्ठ अभियन्ता भिवाड़ी श्री लोकेश गुप्ता को कार्य में लापरवाही बरतने पर निलम्बित किया गया है। उन्होंने बताया कि औद्योगिक क्षेत्र खुशखेड़ा-भिवाड़ी में एक इण्डस्ट्रियल प्लाट के उपर से जा रही 11केवी लाईन व 33केवी लाईन की शिफ्टिंग के कार्य की स्वीकृति क्रमशः अधीक्षण अभियन्ता अलवर व संभागीय मुख्य अभियन्ता जयपुर द्वारा जारी की गई थी।

उत्तर प. रेलवे ने अब तक लगभग 4000 किमी ट्रेक का किया विद्युतीकरण

वर्ष 2022-23 में 1104 किलोमीटर ट्रेक का विद्युतीकरण कार्य पूर्ण कर सम्पूर्ण भारतीय रेलवे में पहले स्थान पर

गरीबों का सितारा

जयपुर। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर वर्ष 2022-23 में पर्यावरण अनूकुल रेल संचालन के लिये 1104 किलोमीटर ब्राडगेज लाइनों का विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे ने वर्ष 2022-23 में सम्पूर्ण भारतीय रेलवे पर सर्वाधिक रेलमार्ग का विद्युतीकरण किया है। उत्तर पश्चिम रेलवे पर अब तक कुल लगभग 4000 किलोमीटर रेलमार्ग का विद्युतीकरण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार महाप्रबन्धक विजय शर्मा के कुशल दिशा-निर्देशन में उत्तर पश्चिम रेलवे पर रेल विद्युतीकरण के कार्य तीव्र गति से किये जा रहे है। इस रेलवे पर विद्युतीकरण के कार्य को विगत वर्षों के बजट में प्राथमिकता प्रदान की गई है। उत्तर पश्चिम रेलवे पर अब तक 3969 किलोमीटर रेल लाइन पर विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। उत्तर पश्चिम रेलवे में वर्ष 2022-23 में 1104 किलोमीटर रेलखण्ड के विद्युतीकरण का कार्य पूरा किया गया जोकि इस वर्ष सम्पूर्ण भारतीय रेलवे पर सर्वोत्तम प्रदर्शन है। उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर मण्डल पर शत प्रतिशत (1024 किलोमीटर) विद्युतीकरण किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त अजमेर मण्डल पर 803 किलोमीटर, बीकानेर मण्डल पर 1422 किलोमीटर तथा जोधपुर मण्डल पर 720 किलोमीटर रेलमार्ग का विद्युतीकरण कार्य पूर्ण हो चुका है। उत्तर पश्चिम रेलवे पर शेष रहे लगभग 1550 किलोमीटर रेलमार्ग के विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण करने का लक्ष्य वर्ष 2023-24 रखा गया है। वर्तमान में उत्तर पश्चिम रेलवे पर 116 जोड़ी रेलसेवाएं विद्युत ट्रेक्शन पर संचालित की जा रही है। उत्तर पश्चिम रेलवे पर वर्ष 2023-24 तक सभी रेलमार्गो के विद्युतीकरण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं विद्युतीकरण होने से ट्रेनों की रफ़्तार बढ़ेगी जिससे यात्रा समय में बचत होगी साथ ही डीजल की जगह बिजली के प्रयोग से पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा व राजस्व में भी बचत होगी।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सितारा न्यूज ब्रीफ

माहत्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर विशाल शोभा यात्रा और कलश यात्रा का होगा आयोजन

गरीबों का सितारा

ब्यावर(अनिल सिखवाल)। माली समाज द्वारा आगामी 11 अप्रैल को महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर विशाल शोभा यात्रा और कलश यात्रा का आयोजन किया जायेगा सुभाष उद्यान से शुरू होकर मुख्य बाजार से ज्योतिबा फुले सर्किल पर शोभायात्रा का समापन होगा,माली समाज के चारो धडो सूरज पोल गेट बड़ा बास पंचायत, शाहपुरा मोहल्ला पंचायत, छावनी पंचायत, फूलपुरा पंचायत और माली सेना ब्यावर द्वारा विशाल आयोजन की रुपरेखा तय की गई, कलश यात्रा में 2100 महिलाओ द्वारा कलश,शोभा यात्रा में 51 घोड़िया, 11 बड़ी बग्गी, अनेक प्रकार की झाकिया, सोजत की मशहूर घूमर गैर, शिव पार्वती, खाटू श्याम जी, बजरंग बली, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, लिखमीदास जी महाराज की झाकिया आकर्षक का केंद्र रहेगी इस दिन करीबन 10 से 12हजार समाज बंधु भाग लेंगे।

पुलिस थाना केथुनीपोल क्राइम इंचार्ज जगदीश पांचाल को जन्म दिवस पर दिया सम्मान

गरीबों का सितारा

रैणी (अलवर), महेश चन्द मीना। राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन की राजस्थान प्रदेश प्रभारी जरीना

खान संभाग अध्यक्ष चंदा बरवाडिया व जिलाध्यक्ष लक्की गोयल ने बुधवार को कोटा जिला के उत्तर ब्लॉक मे कैथूनीपोल थाना क्राइम इंचार्ज जगदीश पांचाल के जन्मदिन पर संगठन की तरफ से माला पहनाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर जन्मदिन की बधाई और शुभकामनाऐ दी गई। क्राइम इंचार्ज का संगठन को बहुत सहयोग मिलता रहता है जब भी जरूरत हुई उन्होंने संगठन का पूरा सहयोग किया है और राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन भी हमेशा हमेशा पुलिस प्रशासन व अन्य प्रशासनिक अधिकारियो को सहयोग देने के लिए तत्पर है और आमजन की सेवा मे विश्वास रखता है , हमारा यह संगठन। मिडिया को यह सारी जानकारी जरीना खान राजस्थान प्रदेश प्रभारी राष्ट्रीय मानवाधिकार व भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन के द्वारा दी गई है।

अपहृत बच्ची की बरामदगी की मांग को लेकर ज्ञापन

नेहा चतुवेर्दी की अगुवाई में सौंपा ज्ञापन

अजीत मिश्रा बांदीकुई। बैजुपाडा थाना क्षेत्र में पिछले एक सप्ताह से अपहृत बच्ची को शिघ्र बरामद करने की मांग को लेकर मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी के रीडर को ज्ञापन सौंपा । मामले में अपहृत बच्ची के परीजनो ने बैजुपाडा थाने में अपहरण का मामला दर्ज करा रखा है जिसे आज करीब एक सप्ताह बीत रहा है लेकिन एक सप्ताह बाद भी पुलिस खाली हाथ ही है । जिससे पीड़ित परिवार को किसी अनहोनी का भय सता रहा है । ऐसे में आज राष्ट्रीय महिला जागृति मंच प्रदेश अध्यक्ष नेहा चतुवेर्दी की अगुवाई में मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया और मामले गंभीरता पूर्वक पुलिस द्वारा कार्रवाई अमल में लाई जा कर बच्ची की बरामदगी की मांग की गई है। इस दौरान एडवोकेट श्याम सुंदर शर्मा , सत्यनारायण शर्मा , सुरेश पुजारी, ओमप्रकाश शर्मा सहित अन्य लोग मौजूद रहे ।

राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय अलवर मे पूर्व छात्र परिषद की बैठक का आयोजन हुआ

गरीबों का सितारा

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय अलवर में 05 अप्रैल बुधवार को पूर्व छात्र परिषद की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जी.पी. शर्मा ने की। शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय के नए परिसर में शिफ्ट हो जाने के बाद महाविद्यालय अभी शुरूआती दौर से गुजर रहा है। महाविद्यालय रूपी पौधे को वट वृक्ष बनाने के लिए पूर्व छात्रों का पूरा सहयोग रहेगा। महाविद्यालय के पूर्व छात्र योगेश कुमार ने एल्यूमिनाई मीट को उत्सव के रूप में मनाये जाने का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि उत्सव के रूप में मनाने से पूर्व छात्र परिषद में छात्रों का अधिक से अधिक जुड़ाव होगा। प्राचार्य डॉ. स्मिता मिश्रा ने सभी सदस्यों एवं पूर्व छात्रों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर भागीरथ प्रसाद मीना ने किया। इस मौके पर सचिव प्रोफेसर हरगोविन्द खरेरा, प्रोफेसर भगवान सहाय मीना, प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार मीना, प्रोफेसर श्वेता भारद्वाज, प्रोफेसर रेणुका, प्रोफेसर अजय तंवर, प्रोफेसर पूनम, प्रोफेसर ज्योति यादव, किशनलाल गोवर, सीमा मीना, आनन्द गोयल, निशान्त शर्मा और पूर्व छात्र मौजूद रहें।मिडिया को यह सारी जानकारी स्थानीय महाविद्यालय के प्रोफेसर भागीरथ मीना के द्वारा दी गई है।

विधायक हुडला ने की रामलुभाया और कुलदीप रांका से मुलाकात

महवा को जिला बनाने की बात कही

गरीबों का सितारा

महवा। विधायक डॉ.ओमप्रकाश हुडला ने महवा को जिला बनाने के लिए जिला पुनर्गठन हाईपावर कमेटी के चैयरमेन रिटायर्ड आईएएस रामलुभाया से मुलाकात की और महवा को जिला बनने के सारे मापदंड बताए। उन्होंने बताया की महवा जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-11 पर स्थित दौसा जिले का प्रमुख शहर/कस्बा हैं एवं यह पूर्वी राजस्थान का सडक यातायात का सबसे प्रमुख जंक्शन हैं। कारोबार एवं व्यापार के दृष्टिकोण से यह शहर आस-पास के लगभग 70-80 किलोमीटर तक के क्षेत्र की जनसंख्या के हेतु रोजमर्रा की खरीददारी एवं लोगों के आवागमन का प्रमुख केन्द्र हैं। यह शहर दौसा जिला मुख्यालय से लगभग 70 किलोमीटर दूरी पर हैं, एवं इस तहसील के दूर दराज के गॉवों के लिए जिला मुख्यालय की दूरी 100-120 किलोमीटर तक हैं। यही स्थिति महवा शहर से आस-पास वाले क्षेत्र/तहसील जैसे वैर, भुसावर, नदबई, हलैना (भरतपुर जिला), लक्ष्मणगढ, खेरली, कठूमर, रैणी एवं गढीसवाईराम (जिला अलवर), टोडाभीम (जिला करौली) एवं मण्डावर बसवा, मानपुर, सिकराय एवं बालाजी (जिला दौसा) के क्षेत्रों एवं गावों की दूरी भी उनके जिला मुख्यालय से लगभग 100-120 किलोमीटर तक हैं। अगर महवा को जिला मुख्यालय के रूप में क्रमोन्नत कर दिया जाये तो आस पास की लगभग 7-8 लाख की आबादी की जनसंख्या को अपने जिला मुख्यालय की दूरी 120 किलोमीटर से घटकर 40-50 किलोमीटर मात्र रह जायेगी। इस तरह महवा को एक छोटे जिले के रूप में विकसित कर बेहतर प्रशासन एवं इतनी भारी आबादी को जिला मुख्यालय के सम्पर्क में सुगमता और सहजता भी प्राप्त होगी। उन्होंने उन्हें बताया की महवा शहर के आस-पास वाले क्षेत्र/शहर जैसे वैर, हलैना, भुसावर (भरतपुर जिला) टोडाभीम (करौली जिला), खेडली, लक्ष्मनगढ, रैणी (अलवर जिला), बसवा, सिकराय व नवगठित मण्डावर एवं

बैजूपाडा तहसील (दौसा जिला) आदि के समूचे जन समुदाय की संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, के दृष्टिकोण से इनमें काफी समानता हैं। इन क्षेत्रों के लोगों का आपसी मेल-जोल एवं सदव्यवहार काफी हद तक खूब मिलता जुलता हैं। अगर महवा उपखण्ड मुख्यालय को जिला बनाया जाता हैं तो महवा के इर्द-गिर्द 50-60 किलोमीटर की परिधी में बसे हुए लगभग 1200 गॉव/कस्बे शहर के मध्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक समानता होने से सदभाव एवं समरसता का और विकास होगा एवं आम जन में इस निर्णय से भारी हर्ष एवं खुशी मिलेगी।उन्होंने उन्हें आगे जोड़ते हुए कहा की भरतपुर जिले के जैसे वैर, हलैना, भुसावर व अलवर जिले के खेडली, लक्ष्मनगढ, रैणी एवं करौली जिले के टोडाभीम कस्बों की इनके जिला मुख्यालय से दूरी लगभग 100 किलोमीटर से अधिक हैं।जबकि महवा जिला मुख्यालय बनाया जाता हैं तो इन प्रत्येक क्षेत्रों से महवा की दूरी अधिकतम मात्र 40 किलोमीटर ही रह जायेगी। महवा जिला मुख्यालय बनाये जाने से दौसा जिले के बसवा, मण्डावर, बैजूपाडा व सिकराय तहसील क्षेत्रों की दूरी लगभग 25-30 किलोमीटर ही रह जायेगी जबकि वर्तमान में इनके जिला मुख्यालय दौसा की दूरी 60 अथवा इससे अधिक किलोमीटर है। महवा में काफी सारे भवन जैसे पुराना चिकित्सालय, पुरानी तहसील, पुराना न्यायालय इत्यादि इस समय खाली एवं अप्रयुक्त पडे हुऐ हैं जिन्हें पूरी तरह काम में लिया जा सकता हैं। महवा में सरकारी कार्यालयों के लिए पर्याप्त मात्रा में भूमि पूर्व से ही अधिगृहित हैं जिस पर हाल ही में नवनिर्मित उपखण्ड अधिकारी, तहसील कार्यालय एवं अति. सत्र न्यायालय बन चुके हैं एवं चल रहे हैं। इस भूमि में जिला मुख्यालय हेतु सारे कार्यालय एवं उनके भवन निर्मित किये जा सकते हैं। महवा में रीको द्वारा पूर्व में अधिगृहित औद्योगिक क्षेत्र की भूमि अप्रयुक्त एवं खाली पडी हुई हैं इसे भी इस दृष्टिकोण से काम में लिया जा सकता हैं। महवा के आस-पास काफी मात्रा में सरकारी/सिवायचक भूमि भी उपलब्ध हैं जिस पर भी अन्य विभाग/कार्यालयों का विस्तार किया जा सकता हैं। इस प्रकार महवा में जिला मुख्यालय बनाने हेतु भूमि व भवन सम्बन्धी पर्याप्त संसाधन उपलब्ध है। महवा शहर पूर्वी राजस्थान का बहुत बड़े आटोमोबाईल मार्केट के रूप में जाना जाता है, यह शहर कृषि एवं सिचांई उपकरण का भी बहुत बड़ा बाजार है। महवा खाद्यान्न व कृषि उत्पादन की दृष्टि से बेहद विकसित क्षेत्र है एवं यहाँ के क्षेत्र के किसान एवं आमजन काफी प्रगतिशील हैं।

गृह विज्ञान प्रयोगशाला, योग और ध्यान साधना कक्ष का हुआ उद्घाटन

गरीबों का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित वर्द्धमान कन्या पी. जी. महाविद्यालय में नवनिर्मित वातानुकूलित आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण गृह विज्ञान प्रयोगशाला तथा योग एवं ध्यान साधना कक्ष का उद्घाटन बैण्ड की सुमधुर ध्वनि के बीच भामाशाह महावीरचंद व गौतमचंद तालेड़ा, चैन्नई के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ इस अवसर पर शिक्षण समिति के अध्यक्ष शांतिलाल नाबरिया, मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख व महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. आर. सी. लोढा द्वारा भामाशाह महावीरचंद व गौतमचंद तालेड़ा का शॉल, साफा एवं माला पहनाकर स्वागत करते हुए स्मृति चिन्ह भेट किया ।कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं के लिए अत्याधुनिक सुविधाओ से परिपूर्ण द्विमंजिला कैफेटेरिया के नव-निर्माण हेतु स्व. लक्ष्मीचंद मिठ्ठालाल तालेड़ा की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र माणकचंद , सुरेन्द्रकुमार, अशोक कुमार , महावीरचंद , गौतमचंद तालेड़ा, चैन्नई-जयपुर द्वारा इकतीस लाख रू. के अर्थ सहयोग की घोषणा की गई । कार्यक्रम में सम्पतराज छल्लाणी, प्रकाशचंद गदिया, रमेशचंद मेड़तवाल, दीपचंद कोठारी, चंदूलाल कोठारी, महावीरचंद बिनायकिया, देवराज लोढ़ा, उत्तमचंद देरासरिया, धनपतराज श्रीश्रीमाल , सभी संकाय सदस्य एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन निधि पंवार एवं अनुपमा दाधीच ने किया।

आदर्श अष्टम सामूहिक विवाह सम्मेलन आज

गरीबों का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। तेलियान साहू समाज वैवाहिक समिति ब्यावर के तत्वाधान में आदर्श अष्टम सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन आज गुरुवार को होने जा रहा है तेली समाज वैवाहिक समिति ब्यावर के अध्यक्ष रमेश कुमार जादम ने प्रेस वार्ता के दरमियान बताया कि उक्त आदर्श अष्टम सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ होने जा रहा है समिति के द्वारा वर वधू को विभिन्न प्रकार के उपहार दिए जाएंगे जिसमें सोने और चांदी के आभूषण भी विद्यमान रहेंगे इसके अलावा अलमारी, पलंग, 21 बर्तन, गद्दा, तकिए, सिलाई मशीन हाथ की, छत का पंखा, चौकी ,बेस दिया जाएगा महामंत्री गोविंद राम मंगरोला ने बताया कि उक्त विवाह सम्मेलन में पाणीग्रहण संस्कार वैदिक रीति एवं धमार्शास्त्र अनुसार संपन्न होंगे साथ ही साहू वाटिका में बुधवार को वार्ता के दरमियान सामूहिक विवाह सम्मेलन के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई उक्त वार्ता में समाज के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति विद्यमान रहे जिसमें कैलाशचंद सिसोदिया, बाबूलाल अजमेरा, पिंटू साहू , प्रकाश चंद मंगरोला, भंवरलाल जादम , माणकचंद जादम, बुद्धाराम जादम , पन्नालाल , चांदमल मांवर, ओमप्रकाश रेगा, रघुनाथ पंचोली, गोकुल जादम इत्यादि व्यक्ति मौजूद थे।

उठ रही मांग : बांदीकुई जिला बनाओ समिति का संघर्ष तेज

गरीबों का सितारा

अजीत मिश्रा/बांदीकुई । बांदीकुई जिला बनाओ सर्व समाज संघर्ष समिति के तत्वधान

में आज दूसरे दिन आमरण अनशन क्रमिक अनशन एवं अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन कर रहे सर्व समाज के लोगों का रुझान बांदीकुई को जिला बनाने को लेकर बढ़ता जा रहा है रोजाना नए-नए विकल्पों के सहारे इस धरना स्थल पर सरकार तक अपनी बात पहुंचाने एवं सरकार को मनाने के नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं जिसमें आज वार्ड नंबर 17 द्वारा शहर के मुख्य मार्गो से बांदीकुई जिला बनाओ के लिए महिलाओं को इस मुहिम से जोड़ा गया और धरना स्थल पर राजस्थान गुर्जर महासभा की तहसील सभा बांदीकुई के प्रवक्ता राघवेंद्र पंवार और संरक्षक मुकेश माल द्वारा 21 सदस्यों ने धरने के समर्थन में बैठे इसी के साथ कल शाम क्रमिक अनशन पर बैठे ओम प्रकाश शर्मा मुंशी की अचानक तबीयत बिगड़ जाने से अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा वही आमरण अनशन पर बैठे लोगों की स्थिति अभी ठीक बनी हुई है वही धरना-प्रदर्शन कर रहे लोगों ने आज रक्त क्रांति लाने के उद्देश्य से राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का ध्यानाकर्षण करने के लिए 1000 पोस्टकार्ड अपने रक्त से लिखने का संकल्प लिया जोकि खबर लिखने तक जारी रहा धरना प्रदर्शन कर रहे सर्व समाज के लोगों को मिल रहे अपार समर्थन को लेकर रोजाना धरनार्थियो की संख्या में लगातार इजाफा होता जा रहा है आज एक विशेष बैठक में शहर के व्यापार मंडल और प्रबुद्ध जनों को बुलाया गया है ताकि धरने की आगामी रणनीति को तैयार किया जा सके ।

वाईस प्रिंसिपल सीधी भर्ती सहित अनेक माँगो को लेकर दिया ज्ञापन

गरीबों का सितारा

रैणी (अलवर) महेश चन्द मीना। राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ ब्लॉक अध्यक्ष खेमराज मीना के नेतृत्व में अध्यापको द्वारा अपनी माँगो को लेकर उपखण्ड अधिकारी रैणी रिया डाबी के माध्यम से मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के नाम ज्ञापन दिया गया जिसमे मुख्य मांगे थी -- शिक्षको का पारदर्शी ट्रांसफरनीति नीति के साथ गृह जिलो मे स्थानांतरण एवम. शिक्षको को गैर शैक्षणिक कार्य वोटर लिस्ट व अन्य से मुक्त रखा जाए सेकंडरी हेड मास्टर के स्थान पर नव सृजित पद वाईस प्रिंसिपल के 50 प्रतिशत पद सीधी भर्ती से भरे जाने व लंबे समय से चली आ रही वेतन विसंगतियों को दूर करने तथा तृतीय श्रेणी व द्वितीय श्रेणी अध्यापको की पदोंउन्नति मांग की। खेमराज कमिटी के निर्णय को सार्वजनिक कर लागू किया जाए। ब्लॉक उपाध्यक्ष बब्लूराम ने बताया कि शिक्षको की उक्त मांग लम्बे समय से है इसलिए सरकार को इन पर समय रहते हुए ही ध्यान देंना चाहिए और जल्द पूरी करनी चाहिए। इस दौरान मुकेश इटोली, एस एस डाटा राम, रामोतार बलाई , कमलकांत, करण सिंह, विक्रम चेचिवाल,हरीममोहन, पप्पू राम, जगदीश बैरवा,जितेंद्र किराड, रामकेदार, सुरेश चंद, प्रलाद कोली जय नारायण, राजपाल, महेश मीना, सीताराम सहित अनेक शिक्षक उपस्थित रहे।मिडिया को यह सारी जानकारी शिक्षक संघ समिति के प्रदेश प्रतिनिधी एस एम डाटाराम के द्वारा दी गई है।

राजस्थान सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की दी जानकारी

अलवर शहर विधानसभा के सरदार वल्लभभाई पटेल मंडल अंतर्गत वार्ड नंबर 63 के खारबास शिवाजी पार्क में हाथ से हाथ जोड़ो अभियान कार्यक्रम में लोगों को राजस्थान सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की जानकारी दी

गरीबों का सितारा

रुपेश शर्मा, अलवर । कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने घर घर जाकर प्रचार किया। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के संदेश ओर पूर्व केंद्रीय मंत्री भंवर जितेंद्र सिंह के विकास कार्यों के पंपलेट बांटे गए और सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं जिसमें उज्जवल योजना, चिरंजीवी योजना के तहत 25 लाख तक का मुफ्त इलाज, घरेलू उपभोक्ताओं की 100 यूनिट तथा किसानों को 2000

तक बिजली मुफ्त,महिलाओं को रोडवेज किराए में 50% की छूट, इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना, विकलांग स्कूटी योजना, आरटीई के तहत 12वीं क्लास तक मुफ्त शिक्षासहित अन्य योजनाओं के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर शहर अध्यक्ष जयदीप आर्यन, प्रभारी बलराम यादव, प्रवक्ता रिपुदमन गुप्ता, मंडल अध्यक्ष मनोज आहूजा, राजेश विरमानी,पार्षद धारा सिंह,राजेश सैनी, कृष्ण कुमार खंडेलवाल,गोपेश शर्मा,रूपेश जैन, रामगोपाल सोनी,गंगाराम बैरवा,अंजु शर्मा,योगेश वशिष्ठ,पवन राजपूत, गंगाराम बैरवा,,दीपक सोनी,हितेश शर्मा, लोकेश, प्रेम सिंह, मोहन सिंह, राजेश राठौड़, सोनू चौहान, साहिल खान, नीरज राठौड़, मुकेश राठौड़, मंगल राठौड़, सुनील राठौड़,उदय सिंह,तेज सिंह, अतरसिंह, गजेंद्र सिंह,तेजप्रताप, कैलाश आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव अजय मेठी के भांजे के आकस्मिक देहांत पर 2 मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

चिंतन

आपदा से निपटने के लिए एकीकृत वैश्विक ढांचा बने

आपदा पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मैकेनिज्म बनना चाहिए, जिसमें आपदा के समय तेजी से रिस्पॉन्ड किया जा सके। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आपदा के प्रभाव से निपटने के लिए एकीकृत रवैया अपनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया है। एक क्षेत्र में आपदा का दूसरे क्षेत्र पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है, ऐसे में इससे निपटने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी है। पांचवें अंतरराष्ट्रीय आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना सम्मेलन (आईसीडीआरआई) की सार्थकता तभी है, जब इस पर कोई इंटरनेशल सिस्टम विकसित हो। आपदाओं का सामना करने में सक्षम अवसंरचना के निर्माण में स्थानीय ज्ञान के कुशल उपयोग पर भी ध्यान देने की जरूरत है। आईसीडीआरआई आपदा और जलवायु अनुकूलन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे पर वैश्विक पहल को मजबूती प्रदान करने के वास्ते सदस्य देशों, संगठनों तथा संस्थानों के गठबंधन का वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है। 40 देश कुछ वर्षों में सीडीआरआई के लिए गठबंधन का हिस्सा बन गए हैं। यह सम्मेलन उन्नत और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं, बड़े और छोटे देशों और वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण को एक मंच पर लाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। बुनियादी ढांचा केवल 'रिटर्न' के बारे में नहीं है, बल्कि पहुंच और लचीलेपन के बारे में भी है। सभी देशों के लिए बुनियादी ढांचे के बारे में समग्र दृष्टिकोण रखना आवश्यक है। सामाजिक और डिजिटल बुनियादी ढांचा उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परिवहन बुनियादी ढांचा। 'लचीली और समावेशी अवसंरचना' इस वर्ष के सम्मेलन का विषय है। भारत और यूरोप में लू, चक्रवात और तुर्किए एवं सीरिया में हाल में आए भूकंप आदि हालिया आपदाएं विश्व के सामने मौजूद चुनौतियों की याद दिलाती हैं। यह उत्साहजनक है कि सरकारों के अलावा वैश्विक संस्थान, निजी क्षेत्र और इस क्षेत्र के विशेषज्ञ भी इसमें शामिल हैं। त्वरित राहत के साथ-साथ आपदाओं के दौरान भी सामान्य स्थिति की जल्द बहाली पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। पिछली आपदाओं का अध्ययन करना और उनसे सबक सीखना ही आगे का रास्ता है। पांच करोड़ डॉलर के इंफ्रास्ट्रक्चर रेजिलिएंस एक्सेलेरेटर फंड ने विकासशील देशों के बीच अत्यधिक रुचि पैदा की है। भारत अपनी मौजूदा जी-20 अध्यक्षता के माध्यम से इस साल दुनिया को एक साथ ला रहा है। आपदा से निपटने के लिए भी एकीकृत वैश्विक प्रयास जरूरी हैं। प्रत्येक राष्ट्र और क्षेत्र विभिन्न प्रकार की आपदाओं का सामना करते हैं। उससे निपटने के लिए संसाधन चाहिए होता है, मिलजुलकर अगर विश्व के देश आपदा से निपटेंगे तो समाधान आसान होगा। भारत की अगुवाई वाला सीडीआरआई में 20 से ज्यादा देशों से 50 वैश्विक संगठनों, निजी क्षेत्र और शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि के तौर पर लगभग 90 विशेषज्ञ शामिल हैं। इसमें अधिक मजबूत दुनिया के लिए संभावित समाधानों को बढ़ाने और आपदा एवं जलवायु अनुकूल उद्देश्यों की सुविधा पर ध्यान केंद्रित किया जाना है। सम्मेलन में बुनियादी ढांचे में मजबूती लाने और आपदाओं के बढ़ते मामलों तथा प्रभाव के कारण लोगों और समुदायों के लिए आवश्यक सेवाओं की पहुंच, वितरण और निरंतरता सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर देने का प्रयास किया जाएगा। आपदा से निपटने के लिए आज जरूरत वैश्विक ढांचा बनाने की है।

कूटनीति
डॉ. एन.के. सोमानी

भूटान के 'रुख' पर चिंता लाजिमी

> डोकलाम मामले में भूटान के बदले हुए रूख की पृष्ठभूमि के बीच भूटान नरेश का भारत आना न केवल भारत बल्कि चीन के रणनीतिक हल्कों में उत्सुकता का कारण बना हुआ है। पिछले दिनों भूटान के प्रधानमंत्री लोटे शेरिंग बेल्जियम के एक अखबार को इंटरव्यू देते हुए डोकलाम के मुद्दे पर भारत को असहज कर देने वाली कुछ बातें कही थी। शेरिंग ने कहा था कि डोकलाम विवाद में भारत, चीन व भूटान बराबर के पक्षकार हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है। जब भी भारत-चीन चाहेंगे भूटान बातचीत करने के लिए तैयार रहेगा। इससे पहले भूटान ने कभी भी डोकलाम मसले पर चीन को पक्षकार नहीं माना था। इसलिए भूटान नरेश की भारत यात्रा महत्वपूर्ण है।

भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वॉन्गचुक इन दिनों भारत के दौरे पर हैं। डोकलाम मामले में भूटान के बदले हुए रूख की पृष्ठभूमि के बीच भूटान नरेश का भारत आना न केवल भारत बल्कि चीन के रणनीतिक हल्कों में उत्सुकता का कारण बना हुआ है। संभवतः यह पहला अवसर है, जब भूटान जैसे छोटे राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष के दौरे को लेकर भारत के सामरिक हल्कों में इस तरह की गर्मजोशी देखी जा रही है। गर्मजोशी की कुछ खास वजह भी हैं।

पिछले दिनों भूटान के प्रधानमंत्री लोटे शेरिंग यूरोपीय देश बेल्जियम की यात्रा पर गए थे। यात्रा के दौरान उन्होंने बेल्जियम के एक अखबार को इंटरव्यू देते हुए डोकलाम के मुद्दे पर भारत को असहज कर देने वाली कुछ बातें कही थी। शेरिंग ने कहा था कि डोकलाम विवाद में भारत, चीन व भूटान बराबर के पक्षकार हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है। जब भी भारत-चीन चाहेंगे भूटान बातचीत करने के लिए तैयार रहेगा। इससे पहले भूटान ने कभी भी डोकलाम मसले पर चीन को पक्षकार नहीं माना था। इसके अलावा शेरिंग ने डोकलाम में अतिक्रमण के सवाल पर चीन को क्लीन चीट देते हुए कहा कि चीन ने भूटान की सीमा में किसी तरह का कोई अतिक्रमण नहीं किया है, जबकि सेटेलाइट तस्वीरें कुछ और ही बयां कर रही हैं। भूटान की जमीन पर चीन द्वारा बसाए गए गांवों की तस्वीर सबने देखी थी। इन तस्वीरों में इस बात का खुलासा हुआ कि चीन ने डोकलाम पठार के 9 किमी पूर्व दिशा की ओर भूटान के क्षेत्र में एक गांव बसा लिया है। यह वही जगह है, जहां 2017 में भारत और चीन के सैन्य बलों के बीच झड़प हुई थी, जबकि भूटानी पीएम कह रहे हैं कि यह कथित बस्तियां भूटानी क्षेत्र में नहीं आती है।

शेरिंग का यह बयान अपने पहले के स्टैंड से बिल्कुल अलग और नया है। उनके इस बयान पर चीनी प्रभाव की झलक देखी जा सकती है। दूसरी ओर भारत का कहना है कि डोकलाम मसले पर चीन का कोई दखल नहीं होना चाहिए। साल 2019 तक भूटान भी भारत के इस स्टैंड पर उसके साथ खड़ा था। ऐसे में सवाल यह उठ रहा है कि नेपाली पीएम ने भारत को परेशान करने वाला यह बयान क्यों दिया है? कहीं ऐसा तो नहीं कि डोकलाम के मोर्चे पर भूटान चीन की आड़ में भारत से किसी तरह की सौदेबाजी की इच्छा रखता हो। कयास तो यह भी लगाए जा रहे हैं कि भूटान अपनी जमीन चीन को सौंप सकता है। पीएम शेरिंग की मंशा पर सामरिक हल्कों में भी सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि, शेरिंग ने भूटान नरेश के भारत आने से पहले ही यह स्पष्ट कर दिया है कि त्रिपक्षीय सीमा क्षेत्र डोकलाम को लेकर भूटान के रूख में कोई बदलाव नहीं आया है। भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने भी वस्तुस्थिति को साफ करते हुए कहा है कि शेरिंग के बयान से भ्रम की स्थिति पैदा हुई है। भारत और भूटान के बीच अच्छा तालमेल है। उन्हें एक संवेदनशील मसले पर चीन की तरफदारी करने से बचना चाहिए। कोई भी ऐसा बयान जो डोकलाम पर चीन को बराबर का साझीदार मानता हो भारत के लिए चिंता का विषय है।

आर्थिक रूप से अल्प विकसित राष्ट्र होने के कारण भूटान की अर्थव्यवस्था कमजोर है, तथा वह मदद के लिए भारत और चीन पर ही निर्भर है। भारत उसका बड़ा मददगार रहा है। भूटान पन-बिजली का एक बड़ा उत्पादक है। वह प्रतिवर्ष भारत को करोड़ों रुपयों की बिजली बेचता है। साल 2018-23 के बीच भारत ने भूटान के विकास के लिए 4500 करोड़ की वित्तीय सहायता दी है। कोविड काल में भी भारत ने भूटान को जरूरी चिकित्सा उपकरण और टीके देकर मदद की थी। भारत की सहायता से वहां चार बड़े बिजली प्रोजेक्ट स्थापित किए गए हैं, जिनकी क्षमता 2000 मेगावाट की है। लैंडलॉक्ड देश होने के कारण भूटान अपनी जरूरतों का 75 प्रतिशत सामान भारत से आयात करता है। उसका 95 प्रतिशत निर्यात भी भारत से ही है। इसके अलावा भूटान भारत की सुरक्षा चिंताओं को लेकर संधि से बंधा हुआ है। वह भारत की सहमति के बीना किसी तीसरे देश से सीमा संबंधी समझौता नहीं कर सकता है। ऐसे में भूटान के भीतर एक तबके का मानना है कि भारत पर भूटान की इतनी निर्भरता ठीक नहीं है और अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर उसे चीन के साथ भी मजबूत संबंध बनाने चाहिए।

दूसरी ओर चीन भारत और भूटान के 74 साल पुराने घनिष्ट संबंधों को अपनी विस्तारवादी नीतियों में बाधा मानता है। वह दूसरे दक्षिण एशियाई देशों की तरह भूटान में अपनी पैठ जमा रहा है। इसी साल जनवरी में चीन के कुनंमिंग शहर में सीमा के मुद्दे पर चीन-भूटान के विशेषज्ञों की बैठक हुई थी। दोनों देश सीमा विवाद सुलझाने के लिए बातचीत में तेजी लाने पर सहमत हुए है। पिछले पांच-छह सालों के दौरान उसने जिस कूटनीतिक तरीके से भूटान के रूख में बदलाव किया है, उससे भारत की सुरक्षा चिंता बढ़ी है। डोकलाम झड़प भी उसकी विस्तारवादी नीति का ही हिस्सा है। चीन चाहता है कि इस ट्राइजक्शन को अंतराष्ट्रीय मानचित्र पर सात किमी दक्षिण में दिखाया जाए। जिससे तकनीकी तौर पर पूरा डोकलाम इलाका चीन के कब्जे में आ जाए। क्षेत्रीय विवाद का हल खोजने में चीन की हिस्सेदारी को लेकर भूटानी पीएम का बयान भारत के लिए मुश्किलें पैदा कर सकता है। ऐसे में भारत कभी नहीं चाहेगा कि डोकलाम पर चीन साझेदार बने।

1960 तक भूटान और चीन के बीच सीमा विवाद के कारण संबंध तनावपूर्ण ही रहे हैं। इससे पहले 1954 में 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ चाइना' में प्रकाशित नक्शे में भूटान के बहुत से क्षेत्र पर चीन अपना दावा कर चुका है। लेकिन अब पिछले कुछ वर्षों में चीन जिस तरह से भूटान में अपना निवेश बढ़ा रहा है, उससे यह संभावना भी जताई जा रही है कि भूटानी पीएम ने चीन के दबाव में आकर भारत को असहज करने वाली बातें कहीं हो। पूरे घटनाक्रम को देखते हुए ही भूटान नरेश भारत का यात्रा पर हों। भारत दौरे के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को विस्तार देने के साथ-साथ भारत को डोकलाम मुद्दे पर भूटान की मनोदशा को समझने एवं उसके बदलते रुख की स्थिति को और अधिक साफ करने की कोशिश करनी चाहिए। हालांकि, प्रधानमंत्री शेरिंग के स्पष्टीकरण के बाद संशय के बादल काफी हद तक छंट चुके हैं, फिर भी यदि भारत भूटान नरेश से इस बात का आश्वासन लेने में कामयाब हो जाता है कि डोकलाम पर उनका देश चीन को उसके नापाक मंसूबों में कामयाब नहीं होने देगा तो कूटनीतिक मोर्चे पर भारत की यह बड़ी जीत होगी।

(लेखक कूटनीतिक विश्लेषक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

जयंती विशेष
अरविंद जयततिलक

भारतीय राजनीति के मनीषी जगजीवन राम

बात चाहे आजादी के संघर्ष की हो अथवा स्वाधीन भारत को अर्थपूर्ण मुकाम देने की या दलित समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने की देश सदैव ही जगजीवन बाबू का ऋणी रहेगा। जगजीवन बाबू का निर्मल व्यक्तित्व, ओजपूर्ण वक्तव्य और समतावादी विचार आज भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत है। गरीब और दबे-कुचले परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी बाबू जगजीवन राम में साहस और आत्मबल गजब का था। छात्र जीवन से ही वे जुझारू प्रकृति के थे और देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी थी। समाज में व्याप्त ऊंच-नीच और गैर-बराबरी की पीड़ा उन्हें द्रवित करती थी किंतु वे कभी इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने हर परिस्थितियों का साहस से मुकाबला किया। बाबू जगजीवन राम में विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की अद्भुत क्षमता थी। अपने कुशल व्यवहार व शालीन आचरण तथा धीर-गंभीर व्यक्तित्व के कारण अपने वैचारिक विरोधियों में भी उतना ही लोकप्रिय थे जितना कि अपनों के बीच। बाबू जगजीवन राम का उदात्त जीवन गांधी जी से प्रभावित था। गांधी की तरह वे भी अहिंसात्मक आंदोलन में विश्वास करते थे। इसीलिए वे गांधी जी के हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। 1942 में जब गांधी जी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन का नारा दिया तो बाबू जगजीवन राम सेनापति की तरह अग्रिम पंक्ति में डट गए। वे महज 28 साल की उम्र में ही 1936 में बिहार विधान परिषद के लिए चुने गए। इसके बाद जब 1935 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के तहत 1937 में चुनाव हुआ तो वे डिप्रेस्ड क्लास लीग के उम्मीदवार के तौर पर निर्विरोध चुने गए। बाबू जगजीवन राम की राजनीतिक स्वीकार्यता इतनी जबरदस्त थी कि अंतरिम सरकार में लार्ड वॉवेल की कैबिनेट में जब एक दर्जन लोगों को शामिल किया गया तो उनमें जगजीवन राम भी थे। उन्हें श्रम मंत्रालय का प्रभार दिया गया। श्रम विभाग के मंत्री तौर उन्होंने अपनी काबिलियत का भरपूर परिचय दिया। उनके मन में आम आदमी के प्रति पीड़ा थी। उनके फोकस में हमेशा समाज के अंतिम पांत का अंतिम व्यक्ति था। वे चाहते थे कि समाज के गरीब, दबे-कुचले और निरीह लोग राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित हो और उनका चतुर्दिक विकास हो। इसलिए श्रम मंत्री रहते हुए उन्होंने ढेरों ऐसे मानवीय कानून बनाए जो आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने मिनिमम वेजेज एक्ट, इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स एक्ट और ट्रेड यूनियन बनाया जिसकी उपादेयता आज भी मजदूरों के हित के लिए सर्वाधिक सारगर्भित मानी जाती है। आजादी के बाद भी बाबू जगजीवन राम ने अपने गुरुत्तर उत्तदायित्व का भली प्रकार निर्वहन किया। 1952 में जब देश में प्रथम आम चुनाव हुआ और पंडित नेहरू की सरकार बनी तो जगजीवन बाबू संचार मंत्री बनाए गए। उन दिनों विमानन मंत्रालय भी संचार विभाग के ही अधीन हुआ करता था। उन्होंने निजी विमानन कंपनियों का राष्ट्रीयकरण किया और गांव-गांव में डाकखानों की उपलब्धता सुनिश्चित की। उनकी योग्यता और कर्मठता से अभिभूत होकर पंडित नेहरू ने उन्हें रेल मंत्रालय का उत्तदायित्व भी सौंप दिया। बतौर रेलमंत्री बाबू जगजीवन राम ने रेलवे के आधुनिकीकरण पर जोर दिया। जगजीवन राम की दिलेरी कभी-कभी कुतुहल पैदा करती थी। सत्ता का मोह उनपर कभी हावी नहीं रहा। जब कामराज योजना आयी तो उन्होंने सत्ता सुख को ठोकर लगाकर एक कर्मयोगी की तरह संगठन पर ध्यान केंद्रित किया। किंतु लालबहादुर शास्त्री के मृत्योपरांत जब इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री बनी तो बाबू जगजीवन राम उनके लिए फिर प्रासंगिक हो गए। उन दिनों भारत संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। उम्मीद की किरण तब जगी जब नॉरमन बोरलाग भारत आकर हरित क्रांति का संचार किया। आधुनिक सोच के प्रबल पैरोकार बाबू जगजीवन राम तब कृषि मंत्री थे। उन्होंने हरित क्रांति को आगे बढ़ाया। महज तीन साल के अंदर ही अन्न उत्पादन के मामले में भारत अपने पैरों पर खड़ा होने लगा। 1971 में भारत-पाक युद्ध में बाबूजी का योगदान अविस्मरणीय है। 5 अप्रैल 1908 को उनका जन्म हुआ था, 6 जुलाई 1986 को उनका निधन हुआ। आज उनकी जयंती पर राष्ट्र नमन कर रहा है।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर में स्थापित की गई नई सिग्नल और टेलीकॉम लैब और मौजूदा प्रणालियों के विकास का शुभारंभ

गरीबों का सितारा

जयपुर। क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान (जेडआरटीआई), उदयपुर यातायात और वाणिज्यिक कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए भारतीय रेलवे के सबसे पुराने प्रशिक्षण संस्थानों में से एक है। प्रशिक्षण केंद्र हर साल पूरे भारत में विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे के लगभग 10,000 रेलवे कर्मचारियों को प्रशिक्षण दे रहा है। इसके परिसर में लगभग 800 प्रशिक्षणार्थयो की रहने और खाने की क्षमता है। आज दिनाँक 05.04.2023 को संस्थान में स्थापित की गई नई सिग्नल और टेलीकॉम लैब और मौजूदा प्रणालियों के विकास का शुभारंभ श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे ने श्री पुनीत चावला, प्रिंसिपल चीफ सिग्नल एवं टेलीकॉम इंजीनियर की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर श्री राजीव धनखड़ मंडल रेल प्रबंधक अजमेर व सुश्री मैत्रेयी चारण, प्रिंसिपल क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर सहित अन्य उच्च रेल अधिकारी उपस्थित थे। यह भारतीय रेलवे का पहला क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान है जिसने सिग्नल और दूरसंचार कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण शुरू किया है। इस अवसर पर पुनीत चावला, प्रिंसिपल चीफ सिग्नल एवं टेलीकॉम इंजीनियर ने प्रशिक्षण संस्थान में प्रदान की जाने वाली नई सिग्नल और टेलीकॉम प्रशिक्षण सुविधाओं और प्रशिक्षण प्रणाली के लाभों की जानकारी दी। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि कवच 4जी/5जी मोबाइल संचार जैसी नवीनतम तकनीक की प्रशिक्षण सुविधा भी नियत समय में प्रदान की जाएगी। उन्होंने इस संस्थान में एसएंडटी प्रशिक्षण शुरू करने के लिए प्रशासनिक और नैतिक समर्थन देने के लिये महाप्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे को धन्यवाद दिया। विजय शर्मा, महाप्रबंधक-उत्तर पश्चिम रेलवे ने उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी जिन्होंने बहुत कम समय में सिग्नल और दूरसंचार प्रशिक्षण सुविधाओं को स्थापित करना संभव बनाया। उन्होंने कहा कि किसी संगठन को सफलतापूर्वक चलाने के लिए कर्मचारियों के कौशल का प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने बताया कि उत्तर पश्चिम रेलवे को वंदे भारत ट्रेन भी मिली है और यह संस्थान नई आवश्यकता के अनुरूप कर्मचारियों के कौशल को उन्नत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि नई सिग्नलिंग लैब और टेलीकॉम लैब की स्थापना के साथ, इस संस्थान को एक वास्तविक बहु-विषयक प्रशिक्षण केंद्र बनाने के लिए एक और कदम आगे बढ़ा है। उत्तर पश्चिम रेलवे इलेक्ट्रो-मैकेनिकल सिस्टम की जगह विभिन्न स्टेशनों पर सिग्नल और पैनल के संचालन के लिए कंप्यूटर आधारित इंटरलॉकिंग सिस्टम को लागू करने में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अब केवल 4 स्टेशन इलेक्ट्रो-मैकेनिकल सिग्नलिंग के साथ काम कर रहे हैं, जिन्हें भी दिसंबर 2023 तक बदल दिया जाएगा। इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग में सभी सिग्नल और पॉइंट पहले की प्रणाली में लीवर के स्थान पर माउस के क्लिक से संचालित होते हैं। उत्तर पश्चिम रेलवे पर पर सभी सेमाफोर सिग्नलों को एलईडी सिग्नलों से बदल दिया गया है जिनकी दृश्यता उत्कृष्ट है। इसके अलावा सिंगल लाइन को भी तेजी से डबल लाइन में बदला जा रहा है। इन दोनों के लिए स्टेशनों के बीच ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए ब्लॉक वर्किंग सिस्टम लगाए गए हैं। क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान को ट्रेनों के कुशल और सुरक्षित संचालन के लिए तकनीकों को बनाए रखने के लिए, एक्सल काउंटिंग सिस्टम के साथ इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, विभिन्न प्रकार की सिंगल लाइन और डबल लाइन ब्लॉक इंस्ट्रूमेंट्स के विभिन्न प्रकारों से सुसज्जित किया गया है। शर्मा द्वारा आज अत्याधुनिक प्रणालियों से जुड़े उपकरणों जैसे बिजली आपूर्ति, डेटा लॉगर, अर्थ लीकेज डिटेक्टर, फ्यूज अलार्म सिस्टम के साथ एक नई इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली का भी उद्घाटन किया गया। स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं जैसे पीए सिस्टम्स, कोच गाइडेंस बोर्ड, जीपीएस आधारित डिजिटल क्लॉक, वाईफाई सिस्टम, यात्रियों की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी आदि पर बहुत जोर दिया जाता है। क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान इन सभी दूरसंचार प्रणालियों पर प्रशिक्षण प्रदान करेगा। उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा उपरोक?त उपकरणों और कई अन?य दूरसंचार प्रणालियों जैसे इलेक?ट्रॉनिक एक?सचेंज, वीएचएफ सेट, संबद्ध उपकरणों के साथ ओएफसी केबल आदि से युक्त एक टेलीकॉम लैब का भी उद्घाटन किया गया। वर्ष 2022-23 के दौरान उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा रिकॉर्ड 50 एलसी गेट्स को इंटरलॉक किया गया है, यानी गेट बंद होने तक ट्रेन के सिग्नल बंद नहीं किए जा सकते हैं, इस प्रकार सड़क उपयोगकताओं के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक विद्युत संचालित लिफ्टिंग बैरियर लेवल क्रॉसिंग गेट भी स्थापित किए गए हैं। वर्तमान में उत्तर पश्चिम रेलवे के 600 सिग्नलिंग और 400 दूरसंचार कर्मचारियों को हर साल साबरमती (गुजरात) में सिग्नल और टेलीकॉम स्कूल भेजा जा रहा है। उदयपुर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण सुविधाओं की स्थापना के साथ ही इन सभी को क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर में ही प्रशिक्षित किया जा सकता है। दूर के प्रशिक्षण केंद्रों में जाए बिना नए तकनीकी युग के बदलते परिवेश से मेल खाने के लिए अपने कौशल को उन्नत करने के लिए कर्मचारियों के लिए यह लाभप्रद होगा।

मिला लाभ : प्रदेश जनता जल योजना में कार्यरत अंशकालीन पंप चालक अब होंगे स्थाई

कार्यरत 7400 पंप चालको को संविदा कर्मचारियों की श्रेणी में मानते हुए मिलेगी स्थाई श्रेणी

परिवर्तन करने के आदेश संयुक्त शासन सचिव प्रथम रामप्रकाश ने किये जारी

गरीबों का सितारा

जयपुर। जलदाय विभाग में जनता जल योजना में कार्यरत 7400 अंशकालीन पंप चालक को संविदा कर्मचारियों की श्रेणी में मानते हुए राज्य सरकार की ओर से रामप्रकाश संयुक्त शासन सचिव प्रथम जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने आदेश जारी कर अंशकालीन पम्प चालक के स्थान पर सहायक पम्प चालक के आदेश जारी किए गये हैं। प्रदेश जनता जल योजना श्रमिक यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष प्रहलादराय अग्रवाल ने बताया कि अंशकालीन पंप चालकों को संविदा कर्मियों की श्रेणी में मानते हुए उनकी समस्याओं का निराकरण करने हेतु प्रमुख शासन सचिव जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा प्रमुख शासन सचिव कार्मिक विभाग को तथ्यात्मक नोट भिजवाया गया था। अंशकालीन कर्मचारियों को स्थायीकरण करवाने व जलदाय विभाग में समायोजित करने की मांग को लेकर संघ द्वारा लगातार धरने प्रदर्शन आंदोलन किये जा रहा थे, अग्रवाल ने बताया कि यह योजना ग्रामीण जल योजनाओं में मोटर चलाने हेतु अंशकालीन श्रमिक लगाने के लिए जलदाय विभाग के माध्यम से मानदेय के पुन भरण की व्यवस्था की गई थी वर्ष 2011 में पंचायत राज विभाग द्वारा अंशकालीन श्रमिकों के मानदेय का भुगतान किया जा रहा था, पंचायत राज द्वारा समय पर श्रमिकों को भुगतान नहीं हो रहा था इन अंशकालीन कर्मचारियों को स्थायीकरण करने के मामले को लेकर संघ द्वारा कई बार धरने प्रदर्शन आंदोलन किये गये। सरकार नहीं मानी तो 2012 मैं कोर्ट की शरण लेनी पड़ी और वर्ष 2012 व 2016 मे श्रमिकों के पक्ष में फैसला हुआ। अग्रवाल ने बताया कि बजट घोषणा 2022 के अनुपालना में सभी जनता जल योजना का संचालन एवं संधारण जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा किया गया। अब राज्य सरकार द्वारा अंशकालीन पम्प चालक के स्थान पर सहायक पम्प चालक पद नाम किया गया है एवं अंशकालीन श्रमिकों को न्यूनतम दैनिक मजदूरी का भुगतान किया जा रहा था। संघ द्वारा कोर्ट में जाने पर माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश 2012 व 2016 को पंचायत राज विभाग के पत्र दिनांक 6-9- 2017 के अनुसरण में जनता जल योजना कार्मिकों के पदनाम में से अंशकालीन शब्द को विलोपित करते हुए इनका पदनाम सहायक पम्प चालक किया गया जिससे तमाम श्रमिकों में खुशी की लहर छा गई। उच्च न्यायालय के प्रकरण को माननीय मंत्री महोदय व अतिरिक्त मुख्य सचिव द्वारा 273 /2023 के द्वारा अनुमोदित किया गया है और बजट में भेज दिया गया है प्रदेश भर में करीब 7400 अंशकालीन पंप चालक जो पंप चलाने का काम कर रहे थे उन्हें अब सहायक पम्पचालक में परिवर्तन करने के आदेश संयुक्त शासन सचिव प्रथम रामप्रकाश ने जारी किये है। यह आदेश जारी होने पर यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष प्रहलाद राय अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष घासीराम जाट, मुख्य महामंत्री जगदीश प्रसाद सैनी, वित्त मंत्री मुरारी लाल सेन, संरक्षक गजेंद्र सिंह राठौड़ आदि ने खुशी व्यक्त की गई।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सितारा न्यूज़ ब्रीफ

धूमधाम से मनेगा हनुमान जन्मोत्सव समारोह

गरीबों का सितारा

मंडावर, (राहुल जोशी)। कस्बे में राजकीय बालिका विद्यालय गर्ल्स स्कूल स्थित श्री बगीची वाले हनुमान मंदिर पर आज गुरुवार को हनुमान जी का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा। हनुमान भक्त दीपक दुसाद ने बताया कि जन्मोत्सव को लेकर मंदिर को विशेष रूप से सजाया जाएगा। मंदिर प्रांगण से प्रातः 8 बजे कस्बे के प्रमुख मार्गो से होकर हनुमान जी की भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी एवं दोपहर को भंडारे का आयोजन किया जाएगा। वही शाम को छप्पन भोग की झांकी के साथ संगीत मय सुंदरकांड का पाठ किया जाएगा। हनुमान जन्मोत्सव के कार्यक्रम को लेकर कस्बे के हनुमान भक्तो में खुशी का माहौल बना हुआ है।

महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती मनाने का लिया निर्णय

गरीबों का सितारा

लक्ष्मणगढ़(अलवर)। सैनी नवयुग मंडल लक्ष्मणगढ़ की एक बैठक कस्बे के कठूमर रोड़ पर स्थित कार्यालय में आयोजित हुई। बैठक में सर्वसम्मति से आने वाली 11 अप्रैल को महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती को बड़ी धूमधाम से मनाए जाने का प्रस्ताव लिया गया। कार्यक्रम में कलश यात्रा व झांकियां निकालने तथा सम्मान समारोह आयोजित करने का प्रस्ताव लिया गया। इस दौरान समाज अध्यक्ष व श्रीराम आदर्श विद्यापीठ उमावि लक्ष्मणगढ़ चेयरमैन अजीत सैनी, लोक मंडल अध्यक्ष पूरण सैनी, उपाध्यक्ष उमाशंकर सैनी, कोषाध्यक्ष भूपेंद्र सैनी, संरक्षक दुलीचंद सैनी, हेतराम सैनी, अंगद सैनी, पप्पू सैनी, सुनील सैनी, लक्ष्मण सैनी, मंगतू सैनी के अलावा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बीचगावा में भाजपाई आज मनाएंगे भाजपा का स्थापना दिवस

गरीबों का सितारा

लक्ष्मणगढ़(अलवर)। भाजपा मंडल बीचगावा के द्वारा गुरुवार सीताराम जी मंदिर में भाजपा का स्थापना दिवस मनाया जायेगा। मण्डल अध्यक्ष रामसिंह दिनकर व ओबीसी मोर्चा मण्डल अध्यक्ष राजकुमार सैनी ने बताया कि स्थापना दिवस समारोह के मुख्यअतिथि मण्डल प्रवासी भाजपा नेता विजय समर्थलाल मीना तथा सहप्रभारी राजेन्द्र चौधरी होंगे। बाद में ओबीसी मोर्चा का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जायेगा। कार्यक्रम में आगामी 16 अप्रैल को होने वाले महाघेराव को लेकर विस्तार चर्चा कर जिम्मेदारी सौपी जाएंगी।

आज लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम, शोभायात्रा भी निकलेगी

गरीबों का सितारा

लक्ष्मणगढ़(अलवर)। कस्बा लक्ष्मणगढ़ मौजपुर हरसाना सहित ग्रामीण क्षेत्र में हनुमान जयंती पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे। भरत सिंह पटेल तूफान सिंह बना सौरभ साहू तथा जसवंत नरुका ने बताया कि हनुमान जयंती पर हनुमान सेवा समिति के तत्वाधान में कस्बे के कपूरी कोई वाले हनुमान मंदिर से हनुमान जी की शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभा यात्रा कस्बे के मुख्य मार्गो से होते हुए भगत सिंह सर्किल पर पहुंचकर संपन्न होगी। इधर मौजपुर व हरसाना में भी हनुमान जयंती पर शोभायात्रा निकाली जाएगी। वही बीचगावा में तकिया वाले हनुमान मंदिर से शोभायात्रा निकाली जाएंगी। बाद में हवन पूजन व विशाल भंडारे का आयोजन किया जायेगा। यह जानकारी समाजसेवी श्रद्धालु मुकेश कुमार शर्मा ने दी।

लक्ष्मणगढ़ में पूर्व सैनिक लीग के सदस्यों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

गरीबों का सितारा

लक्ष्मणगढ़(अलवर)। लक्ष्मणगढ़। पूर्व सैनिक लीग तहसील लक्ष्मणगढ़ से जुड़े सदस्यों ने वन रैंक वन पेंशन की खामियों को दूर करने की मांग को लेकर एसडीएम को रक्षामंत्री के नाम एसडीएम सुभाष यादव को ज्ञापन सौंपा। तहसील अध्यक्ष राम सिंह नरुका ने बताया कि ज्ञापन में मांग की है कि सातवें वेतन और ओआरओपी वन व ओआरओपी-टू की विसंगतियों को संशोधित किया जाए। वीआरएस कोटा वाले जवानों के आरक्षण कोटे को बहाल करने के लिए सरकार से मांग की गई। इस दौरान पूर्व सैनिक लीग तहसील अध्यक्ष नायाब सूबेदार रामसिंह नरुका, कप्तान लक्ष्मण सिंह नरुका, तेज सिंह राठौड़, प्रभु सिंह, गोविंदराम, मोतीलाल के अलावा पूर्व सैनिक मौजूद रहे।

श्री हनुमान जन्मोत्सव पर विभिन्न मंदिरों में विविध धार्मिक कार्यक्रम

गरीबों का सितारा

गुलाबपुरा/ रामकिशन। वैष्णव स्थानीय क्षेत्र में श्री हनुमान जन्मोत्सव पर विभिन्न मंदिरों में विविध धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होगें ! पुजारी महंत पवन दास वैष्णव ने बताया कि श्री हनुमान जन्मोत्सव पर संकट मोचन बालाजी मंदिर सेवा समिति बालाजी बालाजी चौक सब्जी मंडी श्री हनुमान जन्मोत्सव पर विविध धार्मिक कार्यक्रम के तहत रामायण पाठ,सुंदर कांड पाठ, भजन कीर्तन, विशेष चौला चढाया जायेगा व छप्पन भोग का आयोजन एवं श्री बालाजी के दूध अभिषेक एवं गंगा जल अभिषेक किया जाएगा विशेष सोना का चौला चढ़ाया जाएगा तथा दोपहर में महिला मंडल द्वारा संगीत में कीर्तन होगा एवं अखाड़ा करंट वाले बालाजी मंदिर न्यू हाउसिंग बोर्ड एवं शनि मंदिर गुलाबपुरा के भक्त जनों द्वारा श्री नरसिंह द्वारा से प्रारंभ होकर गुरुवार को शाम 4:00 बजे प्रारंभ करेंगे नरसिंह द्वारा मंदिर से प्रारंभ होकर बावरी चौराहे चारभुजा मंदिर सदर बाजार होते हुए श्री संकट मोचन बालाजी मंदिर बालाजी चौक गुलाबपुरा समय 8:15 तक पहुंचेंगे एवं महाआरती एवं प्रसाद वितरण होगा।

गरीबो का सितारा न्यूजपेपर की खबर का असर

डॉ.पंकज गुप्ता ने उठाया था कचरा पात्रों के पास पड़े कूड़े के अंबार का मुद्दा

नगर परिषद ने कचरे के लगे अम्बार को एक ही दिन में कर दिया साफ

गरीबों का सितारा

युवराज शर्मा। दिल्ली दरवाजा स्थित फिनलैंड के दो कचरा पात्र लगे हुए हैं 10 लाख कीमत के कई साल पहले लगे थे और योजना यह थी कचरा इनमें गिरेगा और इनमें से जो बैग हैं उनको उठा कर-के नगर परिषद की गाड़ी ले जाएगी और दूसरे बैग लगा देगी लेकिन कुछ दिनों बाद यह खराब हो गए और यह जो सरकार और टैक्सपेयर्स का पैसा बर्बाद हो गया और कचरा बाहर गिरने लग गया आसपास के बाशिंदे और लोग बदबू से बड़े परेशान हो गए और काफी लोग कचरा सड़कों पर फैला रहता था और काफी लोग फिसल कर कर उसमें गिर जाते थे आसपास के लोग परेशान थे सारा कचरा बाहर सड़क पर पड़ा रहता था और जो है बड़ी गंदगी का आलम रहता था भाजपा नेता और ब्रजभूमि कल्याण परिषद के राष्ट्रीय संयोजक डॉ पंकज गुप्ता ने जोर-जोर से सफाई का मुद्दा उठा रखा है उसका असर भी देखने को मिल रहा है आज दिल्ली दरवाजे पर इन कचरा पात्रों के पास स्थित कचरे के ढेर को साफ कर दिया गया है' कचरा उठा दिया गया है नगर परिषद के द्वारा सफाई कर दी गई ऐसा होने पर भाजपा नेता और ब्रजभूमि कल्याण परिषद के राष्ट्रीय संयोजक डॉ पंकज गुप्ता ने नगर परिषद को और प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया है और यह कहा है कि वो पॉजिटिविटी के साथ परिषद और प्रशासन के साथ हैं तन मन धन से उनके साथ है किसी भी तरह से अलवर को साफ करना है और अलवर को हमें भोपाल और इंदौर जैसा बनाना है लेकिन इसके लिए सभी को मिलकर काम करना पड़ेगा चाहे फिर वो जनता जनार्धन हो या प्रशासन।

मोरीजा रोड संचालित स्टार कैफे व मिलन कैफे पर पुलिस ने दबिश की कार्रवाई

पुलिस ने अनैतिक गतिविधियों के चलते कैफे संचालको को किया गिरफ्तार

- शहर के बेकरी व कैफे संचालकों में कार्रवाई के बाद मचा हड़कंप
- एक दर्जन युवकों को भी पुलिस ने किया शांतिभंग के मामले में गिरफ्तार
- शहर में दो दर्जन से ज्यादा कैफे का हो रहा है संचालन
- चौमूं एसएचओ विक्रांत शर्मा के नेतृत्व में हुई कार्रवाई
- डीसीपी वेस्ट वन्दिता राणा के निर्देश पर हुई कार्रवाई

गरीबों का सितारा

चौमूं (सुनील कुमार पाराशर)। चौमूं थाना पुलिस ने बुधवार डीसीपी वेस्ट वंदिता राणा के निर्देश व चौमूं एसएचओ विक्रांत शर्मा के निर्देशन में शहर के मोरीजा रोड पर संचालित कैफे और बैकरियो पर छापामार कार्रवाई को अंजाम देते हुए अवैध गतिविधियों के चलते कैफे संचालको को गिरफ्तार कर एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया ' कार्रवाई के बाद शहर के कैफे संचालकों में हड़कंप मच गया ' पुलिस ने मोरीजा रोड संचालित दो कैफे पर कार्रवाई करते हुए दोनो के संचालकों को गिरफ्तार कर लिया । बैकरी व कैफे की आड़ में अनैतिक गतिविधियां चलने की पुलिस को मिल रही लगातार सूचना के चलते पुलिस ने बुधवार को मोरिजा रोड संचालित स्टार कैफे व मिलन कैफे पर दबिश देकर कार्रवाई को अंजाम दिया ' कैफे पर शराब व बीयर की बोतलें मिली है पुलिस ने कैफे संचालक दीपक योगी व विपिन जाट को भी गिरफ्तार किया है ' पकड़े गए आरोपियों से पुलिस पूछताछ कर रही है ' आपको बता दें कि इससे पहले भी चौमूं थाना पुलिस अवैध रूप से संचालित कैफे और बेकरियों पर कार्रवाई कर अनैतिक गतिविधियों में लिप्त संचालकों पर कार्यवाही कर चुकी है ' थानाधिकारी विक्रांत शर्मा ने कहा की इस तरह अनैतिक गतिविधियां चलाने वाले तमाम कैफे व बैकरियों पर पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी ' बता दे कि शहर की गली-गली में बेकरी और कैफे की दुकान सजी हुई है ' जहां युवक और युवतियां अक्सर बैठे हुए नजर आते हैं पुलिस ने अब इस गौरखधंधे पर नकेल कसने के लिए पूरा खाका तैयार कर लिया है ' पुलिस के जवान सादा वर्दी में इस तरह की गतिविधियां चलाने वाले कैफे पर बैकरियों पर अपनी नजर बनाये हुए है।

राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय अलवर मे पूर्व छात्र परिषद की बैठक का हुआ आयोजन

गरीबों का सितारा

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय अलवर में बुधवार को पूर्व छात्र परिषद की बैठक का आयोजन हुआ । बैठक की अध्यक्षता जी.पी. शर्मा ने की। शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय के नए परिसर में शिफ्ट हो जाने के बाद महाविद्यालय अभी शुरूआती दौर से गुजर रहा है। महाविद्यालय रूपी पौधे को वट वृक्ष बनाने के लिए पूर्व छात्रों का पूरा सहयोग रहेगा। महाविद्यालय के पूर्व छात्र योगेश कुमार ने एल्यूमिनाई मीट को उत्सव के रूप में मनाये जाने का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि उत्सव के रूप में मनाने से पूर्व छात्र परिषद में छात्रों का अधिक से अधिक जुड़ाव होगा। प्राचार्य डॉ. स्मिता मिश्रा ने सभी सदस्यों एवं पूर्व छात्रों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर भागीरथ प्रसाद मीना ने किया। इस मौके पर सचिव प्रोफेसर हरगोविन्द खरेरा, प्रोफेसर भगवान सहाय मीना, प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार मीना, प्रोफेसर श्वेता भारद्वाज, प्रोफेसर रेणुका, प्रोफेसर अजय तंवर, प्रोफेसर पूनम, प्रोफेसर ज्योति यादव, किशनलाल गोवर, सीमा मीना, आनन्द गोयल, निशान्त शर्मा और पूर्व छात्र मौजूद रहें ।मिडिया को यह सारी जानकारी स्थानीय महाविद्यालय के प्रोफेसर भागीरथ मीना के द्वारा दी गई है।

लूट की झूठी सूचना देने वाला आरोपी गिरफ्तार

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा (बहरोड)। पुलिस को लूट की झूठी सूचना देने वाले युवक को गिरफ्तार कर लिया गया । थाना अधिकारी सुणीलाल मीणा ने जानकारी देते हुए बताया कि बुधवार को भूपखेड़ा थाना क्षेत्र बहरोड निवासी 29 वर्षीय बिजेंद्र पुत्र राजपाल यादव ने सूचना दी कि मेरी गाड़ी के आगे गाड़ी लगाकर एक बिना नंबर बोलेरो में बैठे तीन युवकों ने मेरे से चार लाख 70 हजार रुपए व मेरे दो मोबाइल लूटकर ले गए। जिस पर तत्परता से थानाधिकारी व पुलिस जाब्ता के साथ सूचना देने वाले युवक को घटनास्थल ले जाकर निरीक्षण किया गया। आसपास खेतों में काम करने वाले लोगों से जानकारी प्राप्त की व बैंक में रुपए निकालने के बारे में जानकारी प्राप्त कर पुष्टि नहीं होने पर शिकायतकर्ता से गहनता से पूछताछ करने पर लूट की घटना झूठी निकली। युवक लेबर के रुपए देने के चक्कर में यह षड्यंत्र रचा गया था। मामले में आरोपी भूपखेड़ा निवासी 29 वर्षीय बिजेंद्र पुत्र राजपाल को गिरफ्तार किया गया।

उपखण्ड अधिकारी राजेश जाखड़ ने सीएलजी सदस्यों की मीटिंग

हनुमान जयंती के पावन पर्व पर वीर हनुमान धाम सामोद पर लगने मेले के मद्देनजर ली मीटिंग

शांति का व्यवस्था बनाए रखने को लेकर सौंपी जिम्मेदारियां

गरीबों का सितारा

चौमूं, सुनील कुमार पाराशर। हनुमान जयंती के पावन पर्व पर वीर हनुमान जी सामोद धाम पर लगने वाले मेले के मद्देनजर पंचायत कार्यालय नांगल भरड़ा में चौमूं उपखण्ड अधिकारी राजेश जाखड़ की के मार्गदर्शन व निर्देशन में सीएलजी की मीटिंग का आयोजन हुआ ' मेले के मद्देनजर सीएलजी सदस्यों को मेले के दौरान शांति व व्यवस्था बनाए रखने को लेकर जिम्मेदारियां सौंपी ' तत्पश्चात उपखंड अधिकारी राजेश जाखड़ ने पुलिस सुरक्षा मित्रों को टीशर्ट वितरित की ' साथ ही उन्होंने मेला स्थल, पार्किंग व्यवस्था की जानकारी लेते हुए वाहनों के आवागमन के मार्ग को लेकर रूट चार्ट का मुआयना किया ' साथ ही उपस्थित व्यवस्था धारको को आपातकालीन चिकित्सा व फायर बिग्रेड से सम्बंधित दिशा निर्देश प्रदान किये ' इस मौके पर सामोद एसएचओ पूजा पूनियां स्थानीय सरपंच मनीष सांभरिया सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

चौमूं उपखंड में ग्राम पंचायत स्तरीय जन सुनवाई आज

गरीबों का सितारा

चौमूं (सुनील कुमार पाराशर)। उपखण्ड अधिकारी राजेश जाखड़ के दिशा निदेर्शानुसार आज प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक जन भावना के अनुरूप पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं, व समस्याओं की सुनवाई एवं उनके त्वरित समाधान हेतु पंचायत स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन चौमूं उपखंड की प्रत्येक ग्राम पंचायत के मुख्यालय /राजीव गांधी सेवा केंद्र पर की जाएगी जिसमें सभी पंचायत स्तरीय अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहेंगे` जनसुनवाई में पेयजल, विद्युत, स्वास्थ्य, नाली, सफाई व्यवस्था ,सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, राजस्व विभाग एवं अन्य सभी विभागों से जुड़ी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर त्वरित निस्तारण यथासंभव ब्लॉक के सभी विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों से समन्वय कर किया जाएगा।

खेत को लेकर झगड़ा हुआ पुलिस थाने में मामला दर्ज

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड़। पुलिस थाने में मारपीट का मामला दर्ज हुआ क्षेत्र के भगवाड़ी खुर्द निवासी कैलाश चंद शर्मा पुत्र रामजी लाल शर्मा ने मामला दर्ज करवाया कि गुरुवार को मैं अपने खेत में खाद गिरवा रहा था। रास्ते में दिनेश पुत्र रामानंद का खाली खेत लगता है। जो मेरे खेत मे खाद्य डाल रहा ट्रैक्टर को रुकवा दिया। फिर मैं उनको समझाने के लिए गया तो दिनेश पुत्र रामानंद निर्मला पत्नी दिनेश ने मेरे साथ कुल्हाड़ी व लाठी-डंडों से मारपीट करने लग गए। जिससे मेरे पेट व बाएं पैर पर गंभीर चोटे आई। व मेरे को एवं मेरे परिवार को जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना की जानकारी में जुट गई।

रामचरण मीना हुए पदोन्नत प्राचार्य का किया पदभार ग्रहण

गरीबों का सितारा

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की ओर से 1941 शिक्षा अधिकारियो को पदोन्नत कर वर्तमान पद स्थापन जगह पर ही उप प्राचार्य पद से प्राचार्य पद पर यथा स्थान कार्य ग्रहण करने के निर्देश दिए गए है ।जिनकी अनुपालना मे अलवर के रैणी-उपखंड क्षेत्र की सरकारी सीनियर स्कूल टहटड़ा मे भी वाइस प्राचार्य रामचरण मीना ने प्राचार्य के रूप मे टहटड़ा स्कूल मे कार्यभार ग्रहण कर लिया है' रामचरण मीना ने बताया कि प्राचार्य मुकुट मीना के द्वारा 04 अप्रैल को ही प्राचार्य का पदभार ग्रहण करा दिया गया है।

जुआ खेलते हुए पांच गिरफ्तार

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड। थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए जुआ खेलते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया। जानकारी देते हुए थाना अधिकारी सुणिलाल मीणा ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर बसई भोपाल सिंह पूरा में कुछ व्यक्तियों द्वारा तास पतियों से जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया। जिसमें 27 वर्षीय जितेंद्र पुत्र मुंशीसिंह राजपूत निवासी बसई भोपाल, 30 वर्षीय मोनू सिंह पुत्र रोशन सिंह राजपूत, 50 वर्षीय बब्लू पुत्र किरोड़ीमल कुम्हार, 45 वर्षीय मुंशीलाल पुत्र ज्ञानीराम, 38 वर्षीय जगरूप सिंह पुत्र जनक सिंह कुम्हार को गिरफ्तार किया गया।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सितारा न्यूज ब्रीफ

पंचायत समिति में एसडीएम ने प्रशासन गांवो के संग अभियान को लेकर बैठक ली

गुलाबपुरा/ रामकिशन वैष्णव। हुरडा पंचायत समिति परिसर के सभागार में प्रशासन गांवों के संग अभियान को लेकर बैठक आयोजित ! राजस्थान विधानसभा में राजस्व विभाग की मांग की चर्चा के दौरान प्रशासन गांवो के संग अभियान के शिविर पुनः आयोजित करवाकर लंबित प्रकरणों के निस्तारण की मांग के संबंध में उपखंड अधिकारी विनोद कुमार मीणा, पंचायत समिति हुरड़ा प्रधान कृष्ण सिंह राठौड़ के सानिध्य में बैठक का आयोजन कर सभी जनप्रतिनिधि गणों से संवाद किया। उपखंड अधिकारी मीणा ने बताया कि राजस्थान सरकार की मंशा अनुसार पूर्व में लगाये गये प्रशासन गांवो के संग अभियान के अंतर्गत आयोजित शिविरों में निस्तारण से शेष रहे प्रकरणों का चिन्हीकरण कराकर 20 अप्रैल से आयोजित किए जा रहे प्रशासन गांवो के संग शिविर में निस्तारण करने हेतु निर्देश दिए । प्रधान राठौड़ ने मीटिंग को संबोधित करते हुए सभी जनप्रतिनिधियों शिविर में उपस्थित रहकर प्रशासनिक अधिकारियों सहित कर्मचारियों का सहयोग करते हुए से आमजन की समस्याओं के समाधान करने की अपील की । इस दौरान तहसीलदार शिल्पा चौधरी, विकास अधिकारी ज्योति प्रजापति ,कांग्रेस कमेटी ब्लॉक अध्यक्ष हस्तीमल चौधरी, सरपंच संघ ब्लॉक अध्यक्ष गोपाल मंडवा, नेता प्रतिपक्ष उमराव चौरडिया ,नायब तहसीलदार हुरडा ब्लॉक के सरपंच, पंचायत समिति सदस्य गण एवं विभिन्न विभागों के विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

फार्म मालिक ने करवाया लूटपाट और फायरिंग का मामला दर्ज

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड। क्षेत्र के गूँती निवासी सुरेंद्र पुत्र रामजीलाल यादव ने पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया कि मंगलवार शाम 7 बजे मैं अपने मुर्गी फार्म का किराया लेने के लिए फार्म पर गया। तो वहां पर मौजूद अमन कुमार पुत्र थावरमल, महेंद्र सिंह पुत्र कृष्ण कुमार, मोनू पुत्र अजय कुमार निवासी डोला की ढाणी व मोहित स्वामी एवं एक अन्य व्यक्ति। जिनके पास स्विफ्ट डिजायर गाड़ी थी। जिसके पीछे गुर्जर लिखा हुआ था। व शराब पी रहे थे। मैं फार्म का किराया 30 हजार रुपए लेकर वापस अपने घर जाने लगा तो इन लोगों ने मुझे गाली गलौज शुरू कर दिया। व मारपीट करके मुझे नीचे पटक कर लात गुस्सो से मेरे साथ मारपीट की तथा महेंद्र ने अपनी जेब से देशी कट्टा निकालकर मुझे जान से मारने की नियत से मेरी कनपटी पर कट्टा लगा दिया। और मेरी जेब में रखें 30 हजार रुपए निकाल ले गए व हवा में दो फायर किए और मुझे कहा कि अगर तूने हमारे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई तो तुझे जान से खत्म कर देंगे। मैं अपनी जान बचाकर वहां से भाग कर अपने घर पर पहुंचा और अपने परिवार जनों को पूरी कहानी के बारे में बताया। पुलिस ने घटना के विषय मे मामला दर्ज कर लिया।

राजस्थान ब्राह्मण महासभा विद्याधर नगर अध्यक्ष नवनियुक्त

विद्याधर नगर क्षेत्र का चुनाव हुआ संपन्न

गरीबों का सितारा

जयपुर। बुधवार को ब्राह्मण महासभा की और.से विद्याधर नगर क्षेत्र के चुनाव संपन्न हुए जिसमें रवि शंकर शर्मा को अध्यक्ष राजस्थान ब्राह्मण महासभा विद्याधर नगर इकाई नियुक्त किया गया। राजस्थान ब्राह्मण महासभा विद्याधर नगर के सभी सदस्यों द्वारा रवि शंकर शर्मा को अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित किया गया। निर्वाचित अध्यक्ष शर्मा ने सभी का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया और यह भी अपेक्षा की कि आप सभी का अपना सहयोग एवं स्नेह बना रहेगा।

नवनिर्वाचित ब्लॉक अध्यक्ष व उप जिलाप्रमुख का कांग्रेसी कार्यकताओं ने किया स्वागत

जयपुर। हरमाड़ा दिल्ली बाइपास स्थित रोड नम्बर 5 डागर काम्प्लेक्स पर हाल ही में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी विस्तार में आमेर विधानसभा के रामपुरा डाबडी ब्लॉक से रोजदा निवासी बाबुलाल बुनकर भुखल को अध्यक्ष बनने पर कांग्रेसी कार्यकताओं ने बाबुलाल भुखल व उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर का सुत की माला पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान बाबुलाल भुखल ने अध्यक्ष बनने पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर ने भुखल को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देकर कहा कि ब्लॉक के सभी कांग्रेसी कार्यकताओं को साथ लेकर काम करके कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने का प्रयास करना है। इस अवसर पर उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर, कानाराम जाटावत, रूपचन्द बुनकर, रमेश बुनकर, अशोक यादव, किशन चौधरी, शिवराज उदय मौजूद थे।

भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस, कार्यकर्ता आज मनाएंगे

गरीबों का सितारा

लालसोट(वरुण कामदार)। भारतीय जनता पार्टी के सभी पदाधिकारी , मंडल कार्यकारिणी सदस्य सभी बूथ अध्यक्ष, सभी शक्ति केंद्र प्रमुख, सभी शक्ति केंद्र संयोजक, पूर्व मंडल अध्यक्ष, पूर्व भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी, सभी मोर्चों के मंडल अध्यक्ष, मोर्चों के मंडल, महिला मोर्चा कार्यकारिणी, प्रकोष्ठ के संयोजक, जिला परिषद सदस्य, पंचायत समिति सदस्य एवम सभी भाजपा के आम कार्यकर्ता की भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस 6 अप्रैल को 'कमल संकल्प उत्सव" के रूप में बड़ाया धर्मशाला मैं प्रातः 9:00 बजे मनाया जाएगा। जिसमें 9:45 बजे पर भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का उद्बोधन भी आप सभी कार्यकताओं को सुनने को मिलेगा।

भाजपा महिला मोर्चा शहर जिला बीकानेर का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गरीबों का सितारा

उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा शहर जिला बीकानेर का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर भाजपा कार्यालय बीकानेर में शहर जिला अध्यक्ष विजय आचार्य एवं भाजपा महिला मोर्चा बीकानेर संभाग प्रभारी श्रीमती विनीता आहूजा गंगानगर के सानिध्य में एवं जिलाध्यक्ष महिला मोर्चा सुमन छाजेड़ की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। पंजीयन के साथ शिविर का शुभारंभ। सर्वप्रथम मंचासीन अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया वंदे मातरम के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की गई। मंचासीन अतिथियों का स्वागत भाजपा महिला मोर्चा पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। प्रशिक्षण शिविर पांच महत्वपूर्ण विषयों के साथ 5 सत्रों के आयोजन के साथ किया गया। उद्घाटन सत्र के प्रमुख वक्ता शहर जिला अध्यक्ष विजय आचार्य एवं अध्यक्षता महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष सुमन छाजेड़ ने किया। प्रशिक्षण के पहले सत्र का विषय राष्ट्र निर्माण में भाजपा का योगदान एवं विकास यात्रा के बारे में जिलाध्यक्ष ने बहुत ही बारीकी के साथ अपने वक्तव्य से सभी को लाभान्वित किया। इस सत्र का अध्यक्षीय उद्बोधन एवं सत्र का समापन जिला अध्यक्ष सुमन जी ने किया। शिविर का दितीय सत्र के प्रमुख वक्ता बीकानेर प्रभारी महिला मोर्चा विनीता आहूजा रही जिनका विषय ,महिला विरोधी राजस्थान राज्य सरकार उन्होंने राजस्थान में हो रहे महिला अत्याचार के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। इस सत्र की अध्यक्षता महिला मोर्चा पूर्व जिला अध्यक्ष मधुरिमा सिंह ने किया। अध्यक्षीय उद्बोधन एवं समापन सत्र की घोषणा मधुरिमा सिंह ने किया। प्रशिक्षण का तृतीय सत्र की मुख्य वक्ता बीकानेर की महापौर सुशीला राजपुरोहित रही और अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष श्रीमती सुषमा बिस्सा ने किया। तृतीय सत्र का विषय मोदी सरकार में महिला कल्याणकारी योजनाएं जिसमें महापौर सुशीला राजपुरोहित ने सभी योजनाओं के बारे में आंकड़ों सहित विस्तार पूर्वक जानकारी सभी महिलाओं को दी और कहा कि किस तरह हम इन योजनाओं का लाभ सभी को दिला सकते हैं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सुषमा बिस्सा ने कल्याणकारी योजनाओं को घर घर जाकर बताया जाए। एवं सत्र की समाप्ति की घोषणा की। चतुर्थ सत्र में जिला आईटी जिला संयोजक सुशील आचार्य मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे और अध्यक्षता पार्षद सुधा आचार्य ने की। इस सत्र का मुख्य विषय सोशल मीडिया का उपयोग व महत्व व मीडिया जिसके बारे में आईटी सेल सुशील आचार्य ने फेसबुक, ट्विटर, नमो ऐप ,सरल एप आदि के बारे में विस्तारपूर्वक सभी को प्रशिक्षण दिया। सुधा आचार्य ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बहने ज्यादा से ज्यादा अपने कामों को सोशल मीडिया में दिखाएं इस बारे में चर्चा की एवं सत्र की समाप्ति की घोषणा करते हुए सभी को धन्यवाद दिया। प्रशिक्षण के पंचम सत्र का विषय मिशन 2023 - 24 विजय संकल्प में महिला भूमिका जिसके मुख्य वक्ता जिला मंत्री कौशल जी शर्मा ने बहुत ही अच्छे ढंग से बताया और कहा कि किस तरह से 2023 के चुनाव में महिला की भूमिका अग्रणी य रहकर विजय को प्राप्त कर सकती है। जिला मंत्री प्रमिला गौतम ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महिलाएं सक्रिय रहकर शक्ति केंद्र और बूथ तक जाकर संपर्क करें और चुनाव में अपनी भागीदारी किस तरह से निभा सकती है या काम करने का संकल्प दिया। जिला अध्यक्ष सुमन छाजेड़ ने राष्ट्रपति के 2023 के अभिभाषण के मुख्य अंश का वाचन किया एवं इसके प्रपत्र सभी को बाटे। प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र जिला अध्यक्ष सुमन छाजेड़ ने सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन महिला मोर्चा जिला महामंत्री सरिता नाहटा ने किया। इस इस प्रशिक्षण शिविर में महिला मोर्चा जिला पदाधिकारी राजकुमारी मारू, सुनीता हटीला संगीता शेखावत ,भारती अरोड़ा अनु सुथार श्रीमती अनुराधा आचार्य कविता शर्मा, जिला महामंत्री इंदिरा व्यास ,मीडिया प्रभारी आईटी सेल प्रभारी इंदु वर्मा ,संगीता शेखावत, अनुराधा आचार्य आदि उपस्थित रहे। महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष भानु आनंद सीनियर राधा खत्री सुमन जोशी उपस्थित रहीं। महिला मोर्चा जिला कार्यकारिणी सदस्य सरिता अंचलिया, अर्चना सक्सेना, उपासना जैन विशेष आमंत्रित सदस्य आशा पारेख सुधा आचार्य सरस्वती स्वामी उपस्थित रहे मंडल कार्यकारिणी एवं पदाधिकारी सरला राजपुरोहित जतन सिंह सोलंकी राजश्री कच्छावा शर्मिला चैरसिया अन्नपूर्णा जोशी सरस्वती भार्गव शशि गुप्ता मोहिनी चोपड़ा संतोष शर्मा रेखा पंडित माया सोनी शारदा नायक रीना ठाकुर रेखा पारीक प्रियंका सनाढ्य मंडल मंत्री स्वाति छाजेड़ उपस्थित रही। प्रशिक्षण शिविर के सम्पप्न होने के बाद सेल्फी विद लाभार्थी कार्यक्रम किया गया जिसमें सभी बहनों ले सेल्फी ली। नवनियुक्त अध्यक्ष पत्रकार भवानी जोशी स्वागत और अभिनन्दन नवनियुक्त अध्यक्ष पत्रकार भवानी जोशी को प्रेस क्लब का अध्यक्ष का दायित्व मिलने पर महिला मोर्चा के द्वारा शॉल ओढ़ाकर भारत माता की श्रीचित्र भेंट कर एवं आईटी जिला संयोजक सुशील आचार्य ने माला पहनाकर उनका स्वागत और अभिनन्दन किया।

लापरवाही के चलते आतंकवादियों का बरी होना कांग्रेस सरकार को पड़ेगा भारीः जोशी

कहाः जहां एक ओर कांग्रेस सरकार आतंकवादियों के बचाव में 18 वकील खड़े कर सकती है तो राजस्थान की जनता के लिए एक बडा वकील खडा क्यों नही कर सकी

गरीबों का सितारा

जयपुर। भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने मीडिया से रूबरू होते हुए कहा कि 2008 जयपुर में हुए बम ब्लास्ट बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है, कांग्रेस सरकार खुद को बचाने के लिए राजस्थान के बडे-बडे वकीलों को मौटी रकम देकर हायर कर लेती है, लेकिन जयपुर ब्लास्ट में मारे गए 71 लोगों की कांग्रेस सरकार को कतेई परवाह नहीं है, इसी के अन्तर्गत कांग्रेस सरकार द्वारा आतंकवादियों को बचाव में असंवेदनशीलता बरतते हुए एक बडा वकील क्यों नहीं कर सकी। जो इन आतंकवादियों को इनके किये कर्मो की सजा दिला सके। सीपी जोशी ने कहा कि कमजोर पैरवी के चलते जनता विरोधी ऐसे आतंकवादियों का छूंटना कांग्रेस सरकार के लिए बहुत ही शर्मनाक विषय है, कांग्रेस पार्टी के आलाकमान को खुश करने के लिए तुष्टिकरण की राजनीति करते हुए पैरवी को कमजोर करने की कोशिश की है, आश्चर्य का विषय है उदयपुर के कन्हैयालाल की हत्या से पहले स्वयं ने सुरक्षा की मांग की थी। लेकिन पुलिस प्रशासन द्वारा इसे हलके में लेते हुए सहयोग नहीं करते हुए सुरक्षा नहीं दी गई। हत्या के आरोपियों को जनता द्वारा पुलिस को सुपुर्त किया गया तो पुलिस प्रशासन द्वारा जनता को शाबासी देने की एवज में यह कहा गया कि आप लोगों को आरोपियों को पकडकर लाने की कहां जरूरत पड रही है, ऐसे शब्द कांग्रेस सरकार के शासन में प्रशासन द्वारा बहुत ही शर्मनाक विषय है। आज राजस्थान में कांग्रेस सरकार तुष्टिकरण की सारी हदे पार कर चुकी है, हिंदू नववर्ष हो, रामनवमी का जुलूस हो या जय श्रीराम के नारे को रोकने वाली ऐसी जनविरोधी कांग्रेस सरकार कान खोलकर सुनले जब तक इस प्रकार की ओंछी मानसिकता के साथ कांग्रेस की मानसिकता खत्म नहीं हो जाती तबतक भाजपा का कार्यकर्ता जनहित के लिए दृढ संकल्प के साथ खडा मिलेगा। साथ ही इस प्रकार की लापरवाही के चलते दुर्भाग्यपूर्ण फैंसले का परिणाम कांग्रेस सरकार को निश्चित रूप से जनता द्वारा दिया जाएगा।

पैथोलॉजी लेब ऐसोसियेशन के चुनाव हुए सम्पन्न

गरीबों का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। पैथोलॉजी लेब ऐसोसियेशन के चुनाव मंगलवार को होटल गीता ग्राण्ड में सम्पन्न हुए। इसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर दिनेश शर्मा को चुना गया वहीं डॉ. मुकेश जांगिड को सचिव हेतु चुना गया है। इस मौके पर अन्य पदों पर भी सर्वसम्मति से नियुक्तियां दी है।संरक्षक पद पर डॉ. जलेश सिंघल व जय आनन्दानी, उपाध्यक्ष दुर्गेश सैनी, कोषाध्यक्ष रामावतार खण्डेलवाल,सह सचिव विपुल खण्डेलवाल को चुना गया है। इनके अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य के रुप में प्रतिभा शर्मा, बंटी बोहरा, रजत शर्मा, अजित चीता, सलमान काठात, मनोज, दीपक शर्मा, नारायण शर्मा को मनोनित किया गया है। इससे पहले ब्यावर के सभी सदस्यों ने पैथोलॉजी लेब की सभी समस्याओं के बारे में विचार विमर्श किया। सभी सदस्यों ने मरीजों के हितों को ध्यान में रखते हुए किसी भी तरह की कोई परेशानी ना हो उसके सभी पहलुओं पर चर्चा भी की। बैठक में सदस्यों ने सभी लेब मालिकों को उनके विधिक कागजातों को पुरा करने की हिदायत भी दी। इस मौके पर सदस्यों ने लेब से जारी रिपोर्टों पर पूरी तरह से उसकी गुणवत्ता का ध्यान रखने को भी कहा। बैठक के बाद सभी सदस्यों ने नये पदाधिकारियों का स्वागत किया और उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

राजस्थान ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष बने राजेश शर्मा

गरीबों का सितारा

अजीत मिश्रा (बांदीकुई)। राजस्थान ब्राह्मण महासभा खंड बांदीकुई में आज चुनाव पर्यवेक्षक रमाकांत शर्मा पार्षद एवम राम अवतार शर्मा बोहरा को निर्वाचन अधिकारी की देख रेख में संपन्न हुआ। आज राजेश कुमार शर्मा एवं पवन कुमार शर्मा ने अध्यक्ष पद के लिए अपने आवेदन प्रस्तुत किया। समाज हित को ध्यान में रखते हुए एवं बड़ा दिल रखते हुए पवन शर्मा ने अपना फार्म वापस ले लिया फार्म वापस लेने के उपरांत निर्वाचन अधिकारी रामअवतार शर्मा बोहरा ने राजेश कुमार शर्मा वाइस चेयरमैन को विधिवत रूप से राजस्थान ब्राह्मण महासभा के खंड बांदीकुई के निर्विरोध अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित घोषित किया एवं शपथ दिलवाई । अध्यक्ष राजेश शर्मा का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर गोपाल जगदीशगुरु, अनंत शर्मा, प्रमोद व्यास,दिनेश पंचोली गोकुल अवस्थी, जगराम शर्मा, बबलू तिवारी समाजसेवी,प्रवीण शर्मा, राजेश शर्मा, अर्जुन लाल शर्मा,पवन शर्मा, अनंत शर्मा,लोकेश कुमार खेड़ा, सुरेश व्यास, अशोक तिवारी, नागराज शर्मा इत्यादि ने भव्य स्वागत किया । अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि ब्राह्मणों को साथ लेकर चलने का प्रयास किया जाएगा।अति शीघ्र ही कार्यकारणी का विस्तार किया जाएगा।यह जानकारी मीडिया कर्मी नागपाल शर्मा को गोपाल जगदीश गुरु द्वारा दी गई।

भारतीय जनता पार्टी का 43वां स्थापना दिवस आज

गरीबों का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। भाजपा महाराणा प्रताप मंडल आज गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी का 43वां स्थापना दिवस मनाएगा केंद्रीय नेतृत्व के निदेर्शानुसार स्थापना दिवस को कमल संकल्प उत्सव के रूप में मनाना तय किया गया है। इस मौके पर आज प्रातः 8:30 बजे पूर्व विधायक एवं यशस्वी भाजपा अजमेर देहात जिलाध्यक्ष देवीशंकर भूतड़ा मुरारका भवन, डिग्गी मोहल्ला में पार्टी का ध्वजारोहण करेंगे। मंडल अध्यक्ष नरेश मित्तल ने बताया कि भाजपा के स्थापना दिवस कार्यक्रम में प्रातः 9:30 बजे डिजिटल एलईडी के माध्यम से देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का डिजिटल माध्यम से उदबोधन रहेगा एवं सभी शक्ति केंद्र संयोजक एवं सभी बूथ अध्यक्षों को भाजपा का परिचय पत्र देकर एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मान भी किया जाएगा। साथ ही सभी कार्यकर्ता अपने-अपने प्रतिष्ठान व घरों पर प्रातः 8:00 बजे अपने परिवार के साथ पार्टी का ध्वज फहरायेंगे एवं इसकी सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करने का आग्रह किया गया। मंडल के सभी कार्यकर्ता बंधुओं को अधिक से अधिक संख्या में समयानुसार कार्यक्रम में मुरारका भवन, डिग्गी मोहल्ले पर पहुंचने का भी आग्रह किया गया।

समर्थन मूल्य व न्यूनतम मजदूरी कर रहें है मांग, श्रीडूंगरगढ़ से शामिल हुए किसान

गरीबों का सितारा

उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। श्रीडूंगरगढ 5 अप्रैल 20231 राजधानी दिल्ली में अखिल भारतीय किसान सभा की केंद्रीय कमेटी के आह्वान पर दिल्ली के रामलीला मैदान में हजारों किसान व खेतिहर मजदूर एकजुटता साथ प्रदर्शन किया है। ये किसान और मजदूर न्यूनतम समर्थन मूल्य पर फसल खरीद करने, मजदूर की दिहाड़ी न्यूनतम 26 हजार मासिक व स्थाई रोजगार, मनरेगा का रोजगार 200 दिन व दिहाड़ी 600 रू करने, किसान मजदूरों का कर्जा माफ करने, ओलावृष्टी से हुए नुकसान वाली फसलों का बीमा क्लेम देने की मांगो को लेकर दिल्ली में सरकार खिलाफ रोष जता रहें है। जत्थे में श्रीडूंगरगढ़ से कॉमरेड मोहनलाल भादू के नेतृत्व में दिल्ली पहुंचा जिसमें सरपंच सुनील नायक, शेखर रैगर, किसान सभा तहसील सचिव राजेंद्र जाखड़, उपसरपंच लालचंद सारण, जगदीश जाखड़, गोपीराम जाखड़, अशोक शर्मा सहित अनेक किसान शामिल हुए है। भादू ने जानकारी देते हुए बताया कि श्रीडुंगरगढ से एक दर्जन से अधिक किसानों का जत्था देर रात ट्रैन में सवार होकर दिल्ली पहुंचा और किसान मजदूर संघर्ष रैली में शामिल हुआ है।

अपहरण व मारपीट के मामले में फरार चल रहा हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

गरीबों का सितारा

मंडावर। थाना पुलिस ने मंगलवार को मारपीट व अपहरण के मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी सचिन शर्मा ने बताया कि अपहरण व मारपीट के मामले में 1 महीने से फरार चल रहा दिनेश उर्फ डीके मीणा पुत्र उम्मेदी मीणा निवासी ठोड़ी का बास मंडावर को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी ने बताया की डीके मीणा अलवर जिले के रैणी थाना क्षेत्र में फरारी काट रहा था। जिसे मंगलवार को रैणी से गिरफ्तार किया है। जिस पर अलवर, भरतपुर,जयपुर, दौसा जिले के कई पुलिस थानों में कई धाराओं में मामले चल रहे हैं। आरोपी मंडावर पुलिस थाने का हिस्ट्रीशीटर है। मामले में अभी अनुसंधान चल रहा है। और अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। 28 फरवरी को परिवादी कल्लू बलाई पुत्र गोकल बलाई निवासी बनावड़ ने थाना पुलिस में मामला दर्ज करवाया था। जो बस स्टेंड के पास सीताराम गुप्ता की दुकानों पर चौकीदारी का कार्य कर रहा था।

हनुमान जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर हुआ संगीतमय सुन्दर कांड पाठ का आयोजन

गरीबों का सितारा

चौमूं (सुनील कुमार पाराशर)। हनुमान जन्मोत्सव पर आज सायंकाल 6:30 बजे शहर के धोली मंडी स्थित हनुमान मंदिर से श्री हनुमान जी महाराज की भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभा यात्रा शहर के मुख्य मार्गो से होती हुई निकाली जाएगी ' शोभायात्रा का मुख्य आकर्षण उड़ते हुए वीर हनुमानजी की झाँकी होगी ' शोभायात्रा में राम दरबार, भगवान गणेश, सहित अनेक झांकियां सज्जित होगी। शोभायात्रा का मार्ग में जगह जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया जाएगा। इससे पूर्व बुधवार को हजारों श्रद्धालु भक्तों द्वारा मंदिर प्रांगण व मंदिर प्रांगण के बाहर बने सुन्दर कांड आयोजन के स्थल पर बैठकर संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का पठन व रसास्वादन कर भक्तिमय माहौल में संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आनंद लाभ लिया गया ' आयोजन स्थल पर एलईडी पर भी इस भव्य सुन्दर कांड पाठ का प्रसारण किया जा रहा था ' जिससे कि मंदिर में आए श्रद्धालु संगीत में सुंदरकांड पाठ का भरपूर आनंद लाभ प्राप्त कर सके।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

पर्यटन

कमलेश यादव

प्राकृतिक सौंदर्य के स्थलों में शिव गंगा जलप्रपात

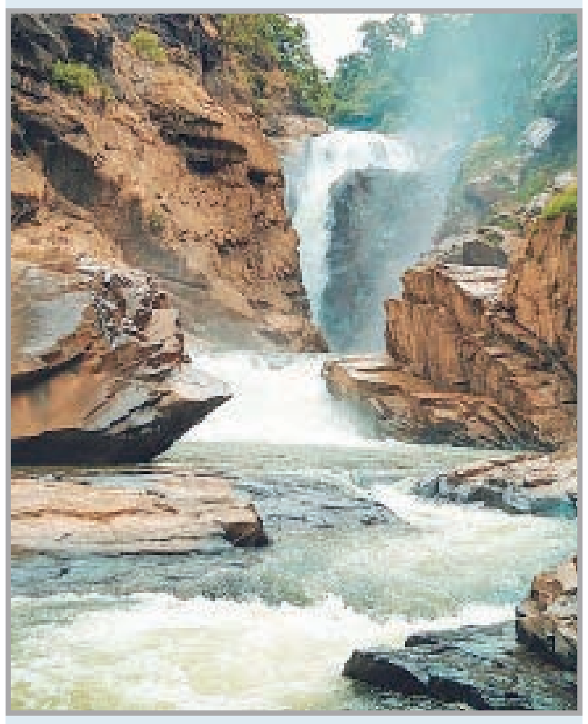

बस्तर अंचल में अनेक खूबसूरत वादियों की कमी नहीं हैं। आज भी अनेक झरने की खोज होती रहती है जो अत्यंत मनमोहक होते हैं। ऐसे ही मनमोहक सौंदर्य से भरपूर घने जंगलों के मध्य शिवगंगा जलप्रपात दो खंडों में स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए कोई रास्ता नहीं है। तीरथगढ़ जलप्रपात से शिवगंगा की दूरी लगभग 6 किमी है। यहां तक पहुंचने के लिए पर्यटकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस जलप्रपात का एक खंड 40 किमी तो दूसरे खंड की ऊंचाई लगभग फीट है। इस जलप्रपात के निकट ही शिवलिंग की स्थापना ग्रामीणों द्वारा की गई है, इसलिए जलप्रपात का नाम शिवगंगा रखा गया है। शासन के नक्शे में लेकर इस स्थल को संवारने की व्यवस्था की जा रही है ताकि पर्यटक इस सौंदर्य स्थलों का भी भ्रमण कर सकें। पर्यटकों को जानकारी होने पर इस स्थल का आनंद लेने अवश्य पहुंचते हैं। बरसात के मौसम में दृश्य मनमोहक होता है, लेकिन आवागमन की उचित साधन नहीं होने के कारण पर्यटन यहां पहुंच पाने में असमर्थ हो जाते हैं।

पुस्तक समीक्षा

पांखी काटे जाही

कृति के नाव: पांखी काटे जाही

कृतिकार: राजकुमार चौधरी 'रौना'

समीक्षक: डा. दादूलाल जोशी

प्रकाशक: वैभव प्रकाशन रायपुर

कीमत: सौ रूपए

कृतिकार ने अपनी इस कृति में गजल के शेरों को मात्राओं में बिठाने का प्रयास किया है। आपने मनुष्य की सोच और उससे उपजी विसंगतियों को व्यंग्यात्मक शैली में कहने का प्रयास किया है। इनकी गजलों में सामान्य और विशेष व्यक्तियों की आदत-व्यवहार का रोचक दिग्दर्शन मिलता है। लेकिन इन सामान्य विषय-वस्तु के अतिरिक्त उनकी गजलों में सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों का खुलासा बड़े ही प्रभावशाली ढंग से हुआ है। वर्तमान में जिस तरह महान प्रजातंत्र में भीतर भीतर सामंती अथवा जमींदारी प्रथा की बदबू समाती जा रही है, उसका यहां बहुत बेबाकी से उल्लेख किया गया है। यह शेर दृष्टव्य है-

चढ़ सिंघासन मौज कर ले तोर तो सरकार हे।
झूठ तक ला सच बना दे तोर तो अखबार हे।।
मांगना हर पाप हे अउ बोलना अपराध जी।
वोट दे के भेज दे अतके अकन अधिकार हे।

रदीफ और काफिया की ओर भी इन्होंने खास ध्यान दिया है जिसके फलस्वरूप कथ्य को प्रभावशाली ढंग से रखने में सफल हुए हैं।

बालोद जिला में स्थित गुंडरदेही से अर्जुन्दा मार्ग पर कांदुल गांव है। कंदमूल, हरी सेम और कांदा भाजी की बहुलता के कारण इस गांव का नाम 'कांदुल' पड़ा। बढ़ई द्वारा निर्मित बैलगाड़ियों के चक्कों के लिए यह गांव प्रख्यात रहा। देश की सीमा सुरक्षा बल में इस गांव के 54 नौजवान सेवारत हैं। यहां के थरती पुत्र उकेश ठाकुर देश के नाम शहीद हुए।

गांव की कहानी : डॉ. राघवेंद्र कुमार 'राज'

कंदमूल की अधिकता से गांव कहलाया कांदुल

बालोद जिला में स्थित गुंडरदेही से अर्जुन्दा मार्ग पर बसा गांव 'कांदुल' स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से रचा-बसा गांव है। पूर्व में यह गांव आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र रहा। शस्य श्यामला कृषि भूमि वर्षा के लिए ईश्वराधीन रही। आज भी यह गांव सिंचाई की दृष्टि से भगवान भरोसे हैं। नामकरण की दृष्टि से देखा जाए तो कंदमूल, हरी सेम और कांदा भाजी की बहुलता के कारण इस गांव का नाम 'कांदुल' पड़ा। बढ़ई द्वारा निर्मित बैलगाड़ियों के चक्कों के लिए यह गांव प्रख्यात रहा। इस गांव की विशेषता यह भी रही कि-यहां कुएं बहुत मात्रा में थे। ब्यारे की अहातें पत्थरों से बने हुए हैं। दलहन -तिलहन के लिए यह गांव समृद्ध रहा। यहां ब्रिटिशकाल से विद्यालय संचालित रहा। सन 1962-63 में पुनर्निर्माण के पश्चात स्वामी मुक्तानंद द्वारा लोकार्पण किया गया। सर्वसमाजोत्थान को ध्यान में रखते हुए मृत्युभोज में कलेवा और मायन भोज के पश्चात बारातियों के साथ गांव वालों के लिए भोजन करना प्रतिबंधित है। रविवार और सोमवार को सारा गांव वर्ष भर सोमवारी और इतवारी त्योहार मनाता है। प्राचीन दंतेश्वरी कुंड आज दंतेश्वरी मंदिर त्रिताल (छीरसागर) के रूप में विद्यमान है। देश की सीमा सुरक्षा बल में इस गांव के 54 नौजवान सेवारत हैं। यहां के थरती पुत्र उकेश ठाकुर देश के नाम शहीद हुए। यहां की सांस्कृतिक धरोहर की कोई सानी नहीं है। सांस्कृतिक विरासत के रूप में ख्याति प्राप्त जस झांकी मंडली को प्रदर्सन के लिए दूर-दूर से आमंत्रित किए जाते हैं।

छत्तीसगढ़ अंचल में लोकगीतों की रानी ददरिया है। यह छोटी, पूर्ण पर बहुभावी रूप में संस्कृति की महत्ताओं को व्यक्त करने में सक्षम है। किसी भी प्रकार के कथ्य को कम शब्दावली में यहां व्यक्त किया जाता है। यह वह श्रृंगार गीत है जो कई स्थानों पर कथ्य के आधार पर प्रबंधकता से जुड़ी होती है। यह लोकगीत श्रम परिहार की कुंठाओं का विसर्जन करने में भी समर्थ होती है।

ददरिया में समाहित वैदिक तत्व

कला जगतः डा. विनय कुमार पाठक

छत्तीसगढ़ अंचल में भारत की वैदिक संस्कृति का स्त्रोत यहां लोकगीतों में सतत प्रवाहित दिखाई देता है। विभिन्न रसों में जिस प्रकार रसों का राजा श्रृंगार है, उसी प्रकार छत्तीसगढ़ अंचल में लोकगीतों की रानी ददरिया है। प्राचीन काल से मनोरंजन के साथ एकल व समूह में ददरिया गाने की परंपरा रही है। समय के अनुसार ददरिया की प्रस्तुति में भी बदलाव देखा गया है। ददरिया में जीवन के सारे रंग समाहित होते हैं, और सुनने और गाने वाले दोनों आनंदित होकर रसपान करने में कोई कमी नहीं करते। यह छोटी, पूर्ण पर बहुभावी रूप में संस्कृति की महत्ताओं को व्यक्त करने में सक्षम है। किसी भी प्रकार के कथ्य को कम शब्दावली में यहां व्यक्त किया जाता है। यह वह श्रृंगार गीत है जो कई स्थानों पर कथ्य के आधार पर प्रबंधकता से जुड़ी होती है। यह लोकगीत श्रम परिहार की कुंठाओं का विसर्जन करने में भी समर्थ होती है। इस गीत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह समय की सीमा में बंधा नहीं, अपितु सुबह-शाम, दिन-मास, वर्ष-सदियों तक अविरल प्रवाहित होने वाली धारा है...ध्वनि रेखा है...जो हृदय में हिलोरे लेने वाले जल तरंग की तरह ध्वनि तरंग के रूप में जंगल की लोक संस्कृति को अभिव्यक्त करती है। मानव प्रेम, समन्वयवाद, आशावाद, पुर्नजन्म, वर्णाश्रय व्यवस्था, प्रकृति को देवता मानकर जनमानस में आध्यात्मिक भावनाओं का आरोपण हमें कहीं न कहीं दिखाई देता है। यही आध्यात्मिक भावना ही यहां के जन जीवन के बीच जीने का आत्मबल प्रदान करती है।

सदी के प्रारंभ में आंचलिक पत्रिका का प्रकाशन

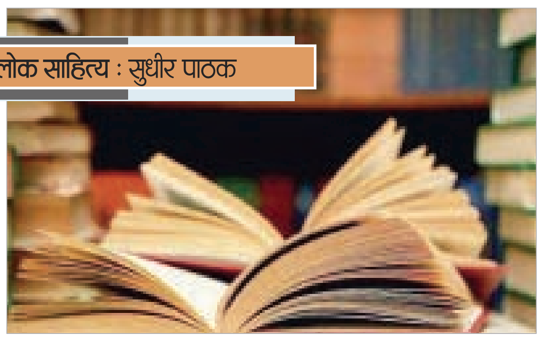

लोक साहित्य : सुधीर पाठक

सन 1921 में लोचन प्रसाद पांडेय ने हीरालाल काव्योपाध्याय के ग्रंथ को परिवर्तित रूप में प्रकाशित किया। यह ग्रंथ मध्य प्रांत और बरार शासन द्वारा कलकत्ता से 'ए ग्रामर आफ छत्तीसगढ़ी डाइलेक्ट आफ हिन्दी' के नाम से छपाया गया। यह ग्रंथ आज भी दुर्लभ है। बिलासपुर की डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के तत्वावधान में 'विकास' नामक पत्रिका का प्रथम अंक अप्रैल सन 1920 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसके प्रथम व द्वितीय अंक में धारावाहिक रूप में आशुकवि शिवदास पांडेय का 'छत्तीसगढ़ी व्याकरण' नामक लेख प्रकाशित हुआ था। इसी तरह सन 1924 के नवंबर अंक में लोचन प्रसाद पांडेय का 'छत्तीसगढ़ी बोली के कुछ प्रयोग और उदाहरण' नामक लेख भी छपा। इसमें लेखक ने सदरी-कोरवा के चार तथा ठेठ छत्तीसगढ़ी के चार वाक्यों से तुलनात्मक अध्ययन का उदाहरण प्रस्तुत किए। सन 1925 के जनवरी, मार्च और सितंबर के अंकों में कन्हैय्या लाल मिश्र ने 'छत्तीसगढ़ी कहावतें' शीर्षक से 191 कहावतों को अर्थ सहित प्रस्तुत किया था। सन 1925 ई. के अगस्त अंक में मधुमंगल मिश्र का एक निबंध 'छत्तीसगढ़ी भाषा संबंधी कुछ छिटपुट विचार' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस निबंध में छत्तीसगढ़ी शब्द समूह के वर्गीकरण, छत्तीसगढ़ी में व्यवहृत संस्कृत के तत्सम और अर्धतत्सम शब्दों का हवाला दिया है। इससे सदी के प्रारंभ से ही छत्तीसगढ़ी की समृद्ध पत्रिकाओं की परंपरा का पता चलता है।

पं.सरयू प्रसाद त्रिपाठी

सुरताः प्रो. अश्विनी केशरवानी

पं. सरयू प्रसाद त्रिपाठी का जन्म 22 अक्टूबर 1891 को छत्तीसगढ़ के पंडरिया में हुआ था। आपके पिता पंडरिया जमींदारी में अपनी सेवाएं दे रहे थे। इसके बाद आप नवागढ़, कोरबा, जांजगीर-चांपा, बिलाईगढ़ और बिलासपुर में भी रहने लगे थे। आपका पारिवारिक साहित्यमय रहा, इसका प्रभाव आप पर पड़ा। अपने समय के अनेक ख्यातिनाम साहित्यकारों का सानिध्य आपको मिला। आपने सीता अन्वेषण(छंदों में), अज्ञातवास (महाकाव्य), मधु सीकर और मधु स्त्रोत ग्रंथ की रचना की। आपकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं के साथ आकाशवाणी नागपुर से प्रसारित होती थी। इसी तरह साहित्य की विधाओं में खड़ी बोली, छायावाद, रहस्यवाद, गीतकाव्य, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद पर काफी रचनाएं आपने लिखी। इसके साथ अकाल, भूखमरी, व्यसन उन्मूलन, और जीवन के यथार्थ आपकी कविताओं के मूल में रहे। धार्मिक आपने छत्तीसगढ़ की धरा का मार्मिक चित्रण भी किया है जिसकी कुछ पंक्तियां-

तू जग से है छत्तीस सदा, तव भूमि रम्य सुखदा वरदा।
शरणागत का आश्रय दाता, अवनत सिर होवे नहीं कदा।
तेरा वसंत ही है पतझड़। ओ छत्तीसगढ़, ओ छत्तीसगढ़, ।

लोक खेल

चंद्रशेखर चकोर

नव खेलों में गेंगे

गेंगे के खेल का नामकरण गेंद और गेड़ी के प्रथम अक्षर गें व गे के संधि से हुआ है। खेल शुरूआत होने पर गेड़ी के माध्यम से बाल को ठोकर मारकर गोल पोष्ट के अंदर भेजना होता है, विरोधी दल विपरीत गोल पोष्ट में गेंद भेजने का प्रयास करते हैं। इस तरह इस खेल को फुटबाल की तरह ही खेला जाता है। अंतर केवल इतना होता है कि फुटबाल खेल में गेंद को पैर से तथा गेंगे खेल में गेंद को गेड़ी के सहारे खेला जाता है।

छत्तीसगढ़ अनेक तरह के खेल खेलने का चलन रहा है। मौसम अनुरूप, तीज-त्योहारों के अनुरूप तथा सेहत को ध्यान खेल खेलने की परंपरा रही हैं। इसी को ध्यान में एक नव निर्मित दलगत गेंगे के खेल का नामकरण गेंद और गेड़ी के प्रथम अक्षर गें व गे के संधि से हुआ है। खेल की दिशा में यह किया गया प्रयोग खिलाड़ियों को आनंदित करेगी। अधिक संख्या में इस खेल के प्रत्येक दल में नौ नौ खिलाड़ी होते हैं। दो दलों में विभाजित नौं-नौं खिलाड़ी में एक-एक खिलाड़ी गोल कीपर बनते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के लिए एक जोड़ी गेड़ी और स्पर्धा के लिए एक गेंद (बालीबाल) होता है। खिलाड़ी बांस के पतले सिरे को पकड़ने के बाद पउवा पर पैर रखकर गेड़ी में चढ़कर चलने लगता है। खेल शुरूआत होने पर गेड़ी के माध्यम से बाल को ठोकर मारकर गोल पोष्ट के अंदर भेजना होता है, विरोधी दल विपरीत गोल पोष्ट में गेंद भेजने का प्रयास करते हैं। इस तरह इस खेल को फुटबाल की तरह ही खेला जाता है। अंतर केवल इतना होता है कि फुटबाल खेल में गेंद को पैर से तथा गेंगे खेल में गेंद को गेड़ी के सहारे खेला जाता है। इस खेल को खेलने के साथ ही देखने में भी रोचक लगता है।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

ईपीएल : चेल्सी-लिवरपूल का मैच गोलरहित ड्रॉ, म्युनिख जर्मन कप से बाहर

एजेंसी ▶▶| लंदन

चेल्सी और लिवरपूल का निराशाजनक प्रदर्शन जारी है और इन दोनों टीमों के बीच इंग्लिश प्रीमियर लीग फुटबॉल प्रतियोगिता का मंगलवार रात को खेला गया मैच गोलरहित ड्रा छूटने से इनकी चैंपियंस लीग में जगह बनाने की संभावना क्षीण पड़ गई है।

चेल्सी ने रविवार को मुख्य कोच ग्राहम पॉटर को बर्खास्त कर दिया था लेकिन उनकी जगह अंतरिम कोच का पद संभालने वाले ब्रूनो साल्टर के आने से भी टीम का भाग्य नहीं बदला। लिवरपूल के अब 28 मैचों में 43 अंक हैं और वह आठवें स्थान पर है। चेल्सी के 29 मैचों में 39 अंक हैं और वह 11वें स्थान पर है। अन्य मैचों में एस्टन विला ने लीस्टर सिटी को 2-1 से, लीड्स यूनाइटेड ने नॉटिंघम फॉरेस्ट को 2-1 से और ब्राइडन ने बोर्नमाउथ को 2-0 से हराया।

फ्रीबर्ग ने बायर्न म्युनिख को हराया

म्यूनिख। फ्रीबर्ग के फारवर्ड लुकास होलर ने आखिरी मिनट में पेनल्टी पर गोल कर बायर्न म्यूनिख को जर्मन कप फुटबॉल प्रतियोगिता से बाहर का रास्ता दिखा दिया। होलर के गोल से फ्रीबर्ग ने यह मैच 2-1 से जीतकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। दक्षिण पश्चिम जर्मनी के इस कम चर्चित क्लब ने पिछले साल जर्मन कप के फाइनल में प्रवेश किया था। इस तरह से बायर्न म्युनिख का पिछले तीन साल में पहली बार जर्मन कप का खिताब जीतने का सपना भी चकनाचूर हो गया। वह पिछले दो सत्र में भी खिताब के करीब नहीं पहुंच पाया था। इससे पहले इंट्राचेट फ्रैंकफर्ट ने यूनियन बर्लिन को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई।

कोपा कप के फाइनल में पहुंचा ओसासुना

मैड्रिड। ओसासुना ने कोपा डेल रे फुटबॉल प्रतियोगिता में एथलेटिक बिलबाओ को उलटफेर का शिकार बना कर लगभग दो दशक में पहली बार फाइनल में प्रवेश किया। यह मैच अतिरिक्त समय तक चला। स्थानापन्न पाब्लो इबनेज ने 116वें मिनट में गोल दागा जिससे ओसासुना ने 2-1 के कुल योग से जीत दर्ज करके फाइनल में जगह बनाई। इससे पहले ओसासुना ने 2005 में कोपा कप के फाइनल में प्रवेश किया था। ओसासुना ने सेमीफाइनल के पहले दौर का मैच 1-0 से जीता था। एथलेटिक ने 33वें मिनट में इनाकी विलियम्स के गोल से कुल स्कोर को बराबर कर दिया जिससे मैच अतिरिक्त समय तक खिंच गया। ओसासुना फाइनल में बार्सिलोना या रियाल मैड्रिड से भिड़ेगा। बार्सिलोना ने पहले चरण में 1-0 से बढ़त हासिल कर रखी है और वह दूसरे चरण के मैच को ड्रॉ कराने पर भी फाइनल में पहुंच जाएगा।

इंटर मिलान और युवेंटस ने खेला ड्रॉ

तूरिन। इंटर मिलान और युवेंटस के बीच इटालियन कप फुटबॉल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल के पहले चरण का मैच 1-1 से ड्रॉ रहा। इस मैच में खिलाड़ियों के बीच काफी नोकझोंक हुई और कुल तीन खिलाड़ियों को लाल कार्ड दिखाया गया। मंगलवार को खेले गए इस मैच में रोमेलु लुकाकू ने दूसरे हाफ के इंजरी टाइम में पेनल्टी को गोल में बदलकर इंटर मिलान को बराबरी दिलाई। इसके कुछ देर बाद दर्शकों पर ताना मारने के लिए उन्हें दूसरा पीला कार्ड देखने को मिला। इससे पहले जुआन कुआड्राडो ने युवेंटस को 83वें मिनट में बढ़त दिलाई थी। कुआड्राडो मैच समाप्त होने के बाद इंटर मिलान के गोलकीपर समीर हंडानोविक से भिड़ गए जिसके कारण इन दोनों को लाल कार्ड दिया गया।

खबर संक्षेप

कोलकाता ने रॉय को 2.8 करोड़ में टीम से जोड़ा

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने नियमित कप्तान श्रेयस अय्यर की चोट और बांग्लादेश के आल राउंडर शाकिब अल हसन के हटने के बाद टीम को मजबूती देने के लिए इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज जेसन रॉय को शामिल किया है। रॉय हालांकि गुरुवार को केकेआर के रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के खिलाफ घरेलू इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मैच में नहीं खेल पाएंगे लेकिन वह नौ अप्रैल को गुजरात टाइटन्स के खिलाफ होने वाले टीम के अगले मैच के लिए चयन के लिए उपलब्ध होंगे।

पंजाब में बावा की जगह गुरनूर टीम में शामिल

मोहाली। पंजाब किंग्स ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बाकी मैचों के लिए बुधवार को चोटिल राज अंगद बावा की जगह युवा आलराउंडर गुरनूर सिंह बराड़ को टीम में शामिल किया। आईपीएल की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि पंजाब किंग्स ने बराड़ को 20 लाख रुपए में अपनी टीम से जोड़ा। पिछले सत्र में पंजाब किंग्स की तरफ से दो मैच खेलने वाले बावा बाएं कंधे की चोट के कारण मौजूदा आईपीएल से बाहर हो गए हैं। बराड़ बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं।

हमने समग्र रूप से अच्छी बल्लेबाजी नहीं की

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के सहायक कोच अजीत अगरकर ने इंडियन प्रीमियर लीग टी20 टूर्नामेंट में मंगलवार को गुजरात टाइटंस के खिलाफ टीम की हार के लिए समग्र रूप से खराब बल्लेबाजी को दोष देते हुए कहा कि किसी एक या दो बल्लेबाज को दोष देने सही नहीं होगा। दिल्ली की टीम पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर आठ विकेट पर 162 रन ही बना सकी। गुजरात टाइटंस ने 11 गेंद शेष रहते चार विकेट गंवाकर मैच जीत लिया।

पंड्या की कप्तानी से प्रभावित हैं मिलर

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के अनुभवी बल्लेबाज डेविड मिलर ने इंडियन प्रीमियर लीग की अपनी टीम गुजरात टाइटंस के कप्तान हार्दिक पंड्या के नेतृत्व कौशल की तारीफ करते हुए कहा कि वह खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। हार्दिक की कप्तानी में गुजरात टाइटंस ने अपने पहले प्रयास में आईपीएल का खिताब जीता था और इस सत्र में भी टीम ने दो मैचों में दो जीत के साथ शानदार शुरुआत की है। टीम ने मंगलवार को दिल्ली कैपिटल्स पर छह विकेट की प्रभावशाली जीत दर्ज की।

इंडियन प्रीमियर लीग : धवन और एलिस ने पंजाब को दिलाई जीत

पंजाब किंग्स ने राजस्थान रॉयल्स को पांच रन से हराया

भाषा ▶▶| गुवाहाटी

सलामी बल्लेबाजों कप्तान शिखर धवन और प्रभसिमरन सिंह के अर्धशतकों के बाद नाथन एलिस की धारदार गेंदबाजी से पंजाब किंग्स ने इंडियन प्रीमियर लीग में बुधवार को यहां राजस्थान रॉयल्स को पांच रन से हराकर पहली जीत दर्ज की। पंजाब ने धवन (56 गेंद में 86 रन, नौ चौके, तीन छक्के) और प्रभसिमरन (34 गेंद में 60 रन, सात चौके, तीन छक्के) के बीच पहले विकेट की 90 रन की साझेदारी से चार विकेट पर 197 रन बनाए। धवन ने जितेश शर्मा (27) के साथ भी दूसरे विकेट के लिए 66 रन जोड़े। इसके जवाब में एलिस (30 रन पर चार विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने राजस्थान रॉयल्स की टीम शिमरोन हेटमायर (17 गेंद में 36 रन, तीन छक्के, एक चौका) और ध्रुव जुरेल (15 गेंद में नाबाद 32, दो छक्के, तीन चौके) के बीच सातवें विकेट के लिए 26 गेंद में 61 रन की साझेदारी के बावजूद सात विकेट पर 192 रन ही बना सकी।

कप्तान संजू सैमसन (42) रॉयल्स की ओर से शीर्ष स्कोरर रहे। लक्ष्य का पीछा करने उतरे रॉयल्स ने यशस्वी जायसवाल (11) के साथ रविचंद्रन अश्विन (00) को पारी का आगाज करने भेजा लेकिन चौथे ओवर तक ही दोनों के विकेट गंवा दिए। अर्शदीप सिंह (47 रन पर दो विकेट) ने यशस्वी जायसवाल को स्थानापन्न खिलाड़ी मैथ्यू शॉर्ट जबकि अश्विन को धवन के हाथों कैच कराया। जोस बटलर भी इस बीच भाग्यशाली रहे जब सैम कुरेन की गेंद पर हरप्रीत बरार ने उनका कैच टपका दिया। बटलर और कप्तान संजू सैमसन ने अर्शदीप पर छक्के जड़े। सैमसन ने हरप्रीत और एलिस का स्वागत दो-दो चौकों के साथ किया लेकिन एलिस ने बटलर (19) को अपनी ही गेंद पर लपका। रॉयल्स ने पावर प्ले में तीन विकेट पर 57 रन बनाए। सैमसन ने बीच के ओवरों में रन गति बनाए रखी लेकिन एलिस की गेंद पर बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में लांग ऑफ पर शॉर्ट को कैच दे बैठे। उन्होंने 25 गेंद की अपनी पारी में पांच चौके और एक छक्का मारा। रियान पराग (20) ने आते ही राहुल चाहर और सिकंदर रजा पर छक्के मारे और इस बीच 12वें ओवर में टीम के रनों का शतक पूरा किया। वह हालांकि एलिस की गेंद पर शाहरूख खान के हाथों लपके गए।

कप्तान शिखर धवन जलवा

आरसीबी के खिलाफ घर में खेलने उतरेगा केकेआर

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स कई स्टार खिलाड़ियों की मौजूदगी वाली रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की टीम के खिलाफ गुरुवार को आईपीएल मैच में घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाने की कोशिश करेगा। केकेआर ने अपने अभियान की शुरुआत पंजाब किंग्स के खिलाफ डकवर्थ लुईस पद्धति से सात रन की हार से की। इसके बाद उसे दो और झटके सहने पड़े पहला बांग्लादेश के स्टार ऑलराउंडर शाकिब अल हसन पारिवारिक कारणों और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की प्रतिबद्धताओं के कारण टूर्नामेंट से हट गए जबकि इसके अगले दिन नियमित कप्तान और मुख्य बल्लेबाज श्रेयस अय्यर पूरे आईपीएल से बाहर हो गए क्योंकि उन्हें पीठ की अपनी चोट का ऑपरेशन करवाना है। केकेआर ने नितीश राणा को कार्यवाहक कप्तान नियुक्त किया था। उसे अपने नियमित कप्तान की दूसरे चरण में वापसी की उम्मीद थी लेकिन अब जबकि वह टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं तब चंद्रकांत पंडित की कोचिंग वाली टीम नेतृत्व के संकट से भी जूझ रही है।

भारत में खेलेंगे रोनाल्डो!

फैंस का सपना हो सकता है साकार

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

दुनिया के दिग्गज खिलाड़ी क्रिस्टियानो रोनाल्डो को सामने से खेलते देखने का सपना सभी फुटबॉल प्रेमी देखते हैं। पुर्तगाल के कप्तान के प्रशंसक दुनियाभर में हैं। भारत में भी उनके ऐसे फैंस हैं जो उन्हें अपनी जमीन पर खेलते देखना चाहते हैं। अब उनका सपना साकार हो सकता है।

रोनाल्डो इस साल के अंत में भारत के दौरे पर आ सकते हैं और इंडियन सुपर लीग की टीम मुंबई सिटी के लिए खेल सकते हैं। दरअसल, मुंबई सिटी एफसी ने जमशेद एफसी को क्लब प्लेऑफ मैच में मंगलवार को 3-1 से हरा दिया। इस जीत के साथ ही उसने एएफसी चैंपियंस लीग 2023-24 के ग्रुप राउंड के लिए क्वालिफाई कर लिया है। एएफसी चैंपियंस लीग में ग्रुप राउंड के मैच 18 सितंबर से शुरू होंगे। दिग्गज क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने पिछले साल के अंत में सऊदी अरब के क्लब अल नस्त्र के साथ करार किया था। उनकी टीम सऊदी प्रोफेशनल लीग में दूसरे स्थान पर है। साथ ही किंग्स कप के सेमीफाइनल में भी पहुंच चुकी है। वह एएफसी चैंपियंस लीग में जगह बना सकती है।

अगर अल नस्त्र सऊदी प्रोफेशनल लीग में शीर्ष पर रहती है या किंग्स कप का फाइनल जीत लेती है तो वह एएफसी चैंपियंस लीग में पहुंच जाएगी। संयोग कि बात है कि एएफसी चैंपियंस लीग में भारत और सऊदी अरब को पश्चिम क्षेत्र में रखा गया है। ऐसे में मुंबई सिटी और अल नस्त्र की टीम एक ही ग्रुप में शामिल हो सकती है। अगर ऐसा होता है तो मुंबई सिटी एक मैच के लिए रियाद जाएगी और अल नस्त्र की टीम एक मैच के लिए भारत आएगी।

95 साल की एथलीट दादी ने पौलेंड में जीते 3 स्वर्ण पदक

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

जब जज्बा मजबूत हो तो मंजिल जरूर मिलती है। यही कुछ कर दिखाया है 95 साल की एथलीट दादी भगवानी देवी डागर ने। उम्र को दरकिनार कर वह कई प्रतियोगिताओं में एक साल में 95 पदक जीत चुकी हैं। दिल्ली के नजफगढ़ की एथलीट दादी भगवानी देवी डागर ने पौलेंड में आयोजित नौंवी वर्ल्ड मास्टर्स एथलीट इंडोर चैंपियनशिप 2023 में तीन गोल्ड जीत कर भारत की झोली में डाले हैं।

भगवानी देवी दादी ने 60 मीटर दौड़, डिस्कस थ्रो और शॉटपुट में स्वर्ण पदक जीते हैं। इससे पहले पिछले साल 2022 में उन्होंने फिनलैंड में आयोजित वर्ल्ड मास्टर एथलीट इंडोर चैंपियनशिप में तीन मेडल जीते थे। पूरे देश में उनकी बहुत सराहना हुई थी, तो देखते ही देखते सेलिब्रिटी बन गई। लाखों करोड़ों महिलाओं के दिल में उन्होंने उम्मीद की किरण जगाई। तीन स्वर्ण पदक जीत कर मंगलवार सुबह भारत लौटीं भगवानी देवी डागर का दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हज़ारों लोगों ने जोरदार स्वागत किया। संस्था अपराजिता ने दादी के सपनों को दी उड़ान

साइना और समीर पहले दौर से बाहर

ऑरलियन्स। लंदन ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साइना नेहवाल बुधवार को यहां ऑरलियन्स मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के पहले दौर में तुर्की की नेसलिहान यिजिट से हारकर बाहर हो गई। भारत के समीर वर्मा भी पहले दौर में हार गए जबकि मिथुन मंजूनाथ, आकर्षि कश्यप और प्रियांशु राजावत ने पुरुष एकल के दूसरे दौर में जगह बनाई। साइना को तुर्की की क्वालीफायर ने महज 39 मिनट में 21-16, 21-14 से हराया। वहीं वर्मा को आयरलैंड के नहाट गुयेन से 19-21, 21-19, 21-17 से हार का सामना करना पड़ा। पुरुष एकल के पहले दौर के अन्य मुकाबलों में भारत के मंजूनाथ ने डेनमार्क के अपने से अधिक रैंकिंग वाले विक्टर स्वेनडेन को 24-22, 25-23 से जबकि राजावत ने हमवतन किरण जॉर्ज को 21-18, 21-13 से हराया।

न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को नौ विकेट से रौंदा, बराबरी पर टी20 श्रृंखला

एजेंसी ▶▶| डुनेडिन

तेज गेंदबाज एडम मिल्ने ने 26 रन देकर पांच विकेट लिए जिससे न्यूजीलैंड ने दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में श्रीलंका को बुधवार को यहां नौ विकेट से करारी शिकस्त देकर तीन मैचों की श्रृंखला 1-1 से बराबर की।

टिम साउदी और लॉकी फर्ग्यूसन के बाद टी20 अंतरराष्ट्रीय में पांच विकेट लेने वाले मिल्ने न्यूजीलैंड के तीसरे गेंदबाज बन गया है। उनकी घातक गेंदबाजी से श्रीलंका की टीम 19 ओवर में 141 रन पर आउट हो गई। इसके बाद सलामी बल्लेबाज टिम सीफर्ट ने 43 गेंदों पर नाबाद 79 रन बनाए जिससे न्यूजीलैंड ने 14.4 ओवर में एक विकेट पर 146 रन बनाकर 32 गेंद शेष रहते हुए आसान जीत दर्ज की। मिल्ने ने पहले मैच में अर्धशतक जड़ने वाले कुसाल परेरा (35) और चरिथ असलंका (26) को भी आउट किया। उन्होंने सलामी बल्लेबाज पाथुम निसांका (0) को भी आउट किया और प्रमोद मदुशन और दिलशान मदुशंका को क्लीन बोल्ड कर पारी को समेटा।

फुटबॉल : टीम में तालमेल की कमी और घरेलू फैंस की हूटिंग से मेसी निराश

लियोनेल मेसी को सऊदी क्लब ने दिया 3600 करोड़ का ऑफर

एजेंसी ▶▶| दोहा

अर्जेंटीना के कप्तान लियोनेल मेसी इस सीजन के बाद फ्रांस के क्लब पेरिस सेंट जर्मेन को छोड़ने का मन बना रहे हैं। क्लब के साथ उनका करार इस साल जून में समाप्त हो जाएगा। पीएसजी ने मेसी के सामने नए कॉन्टैक्ट रखे हैं, लेकिन अर्जेंटीना के कप्तान ने उस पर साइन नहीं किया है। इसी बीच मेसी के पुराने क्लब बार्सिलोना ने उन्हें फिर से वापस बुलाने में दिलचस्पी दिखाई है। वहीं, सऊदी अरब के क्लब अल हिलाल ने रिकॉर्ड 3600 करोड़ रुपए की सैलरी ऑफर की है। पीएसजी की टीम के खिलाड़ियों में तालमेल की कमी है। इससे मेसी निराश हैं। वहीं, मौजूदा कोच क्रिस्टॉफ गाल्टियर के टीम चयन और उनकी योजनाओं से वह खुश नहीं हैं। मेसी इन चीजों को दरकिनार कर भी पीएसजी के साथ आगे जुड़े रहना चाहते थे, लेकिन पिछले कुछ मैचों में होमग्राउंड पार्क डेस प्रिंसेस में घरेलू फैंस ने उनकी हूटिंग की है। इससे वह काफी खफा हैं। दुनिया के कई दिग्गजों ने इस पर निराशा जाहिर की है। बार्सिलोना और फ्रांस के पूर्व दिग्गज थिएरी हेनरी ने कहा कि यह दुखद है। दुनिया के महान फुटबॉलर को हूटिंग करना फुटबॉल का अपमान है।

- पुराने क्लब बार्सिलोना ने फिर से वापस बुलाने में दिखाई दिलचस्पी

आंकड़ों में सैलर

हर साल	3600 करोड़
हर महीने	300 करोड़
हर दिन	10 करोड़
हर घंटे	41 लाख
हर मिनट	70 हजार
हर सेकंड	1100 रुपए

पत्रकार ने किया खुलासा

मशहूर फुटबॉल पत्रकार फैब्रिजियो रोमानो ने मंगलवार को इस बात का खुलासा किया कि सऊदी अरब के क्लब अल हिलाल ने लियोनेल मेसी को आधिकारिक रूप से क्लब के साथ जुड़ने का ऑफर दिया है। अल-हिलाल हर साल मेसी को 400 मिलियन यूरो (करीब 3600 करोड़ रुपए) देने की बात की है। मेसी ने अभी तक इस ऑफर के बारे में कुछ नहीं सोचा है।

रोनाल्डो से ज्यादा होगी सैलरी

मेसी के चिर-प्रतिद्वंद्वी पुर्तगाल के क्लब क्रिस्टियानो रोनाल्डो सऊदी अरब में खेलते हैं। उन्होंने पिछले साल के अंत में अल नस्र के साथ 200 मिलियन यूरो (211 मिलियन डॉलर) यानी 1751 करोड़ रुपए में करार किया था। अगर मेसी अल-हिलाल के साथ करार करते हैं तो रोनाल्डो से बहुत ज्यादा सैलरी उनकी हो जाएगी।

वनडे रैंकिंग में सर्वश्रेष्ठ चौथे स्थान पर पहुंचे शुभमन गिल

एजेंसी ▶▶| दुबई

भारतीय सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल बुधवार को जारी ताजा आईसीसी वनडे रैंकिंग में बल्लेबाजों की सूची में कॅरियर के सर्वश्रेष्ठ चौथे स्थान पर पहुंच गए।

गिल के अलावा विराट कोहली और रोहित शर्मा भी शीर्ष 10 में शामिल हैं। कोहली भी एक पायदान के फायदे से सातवें स्थान पर पहुंच गए जबकि रोहित बल्लेबाजों की रैंकिंग में आठवें स्थान पर बरकरार हैं जिसमें पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम शीर्ष पर काबिज हैं। तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज शीर्ष 10 में बरकरार हैं, वह सूची में शामिल एकमात्र भारतीय गेंदबाज हैं। वह आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड और न्यूजीलैंड के ट्रेंट बोल्ट के बाद तीसरे नंबर पर बने हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका के ऐडन मार्कराम 13 पायदान के फायदे से बल्लेबाजी सूची में 41वें स्थान पर और आल राउंडर सूची में 16 पायदान के लाभ से 32वें नंबर पर पहुंच गए हैं।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रमोद कुमार शर्मा के लिए पूजा प्रिंटर्स सी-4, सुदर्शनपुरा, इंडस्ट्रीज एरिया, जयपुर से मुद्रित एवं 23, गोपी नगर, नियर कुकरखेड़ा मंडी गेट शरद कांटा गली, मुरलीपुरा, जयपुर से प्रकाशित किया जाता है। संपादक प्रमोद कुमार शर्मा। पत्रों में लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादक एवं प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा। संपादक : प्रमोद कुमार शर्मा, मों. 8504812999 ई-मेल : Viksa.pramod999@gmail.com